तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 10, अंक - 11, अक्टूबर 2022 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

रहबर भी ये, हमदम भी ये, ग़म-ख़्वार हमारे
उस्ताद ये क़ौमों के हैं मे'मार हमारे

कुछ कहता है दीप

एक दीप बस एक ही, डरे न तम से मीत।
शेर अकेले देखिये, मन तुम रहो अभीत।।

धरा एक दीपक जले, तारक गगन अनंत।
हिम्मत कभी न हारता, तेल बाति पर्यंत।।

दीपक से सीखो मनुज, जलना पर उपकार।
तभी देवता को लगे, दीपक प्रिय करतार।।

दीपक से दीपावली, खुशियों का त्यौहार।
दीप बिना रोशन नहीं, दीपक विविध प्रकार।।

तम है दीपक के तले, परहित की पहचान।
अपने दुख को भूलिए, दुख दुनिया के जान।।

धन्य दीप जीवन तुम्हें, रोशन करे जहान।
दीप रूप तारे धरे, सूरज चंद्र महान।।

पल दो पल दीपक जिये, करें देह का दान।
जलकर भी दे रोशनी, मनुज सीख विज्ञान।।

बाबू लाल शर्मा, बौहरा
सिकंदरा, दौसा, राजस्थान

(काव्य से साभार)

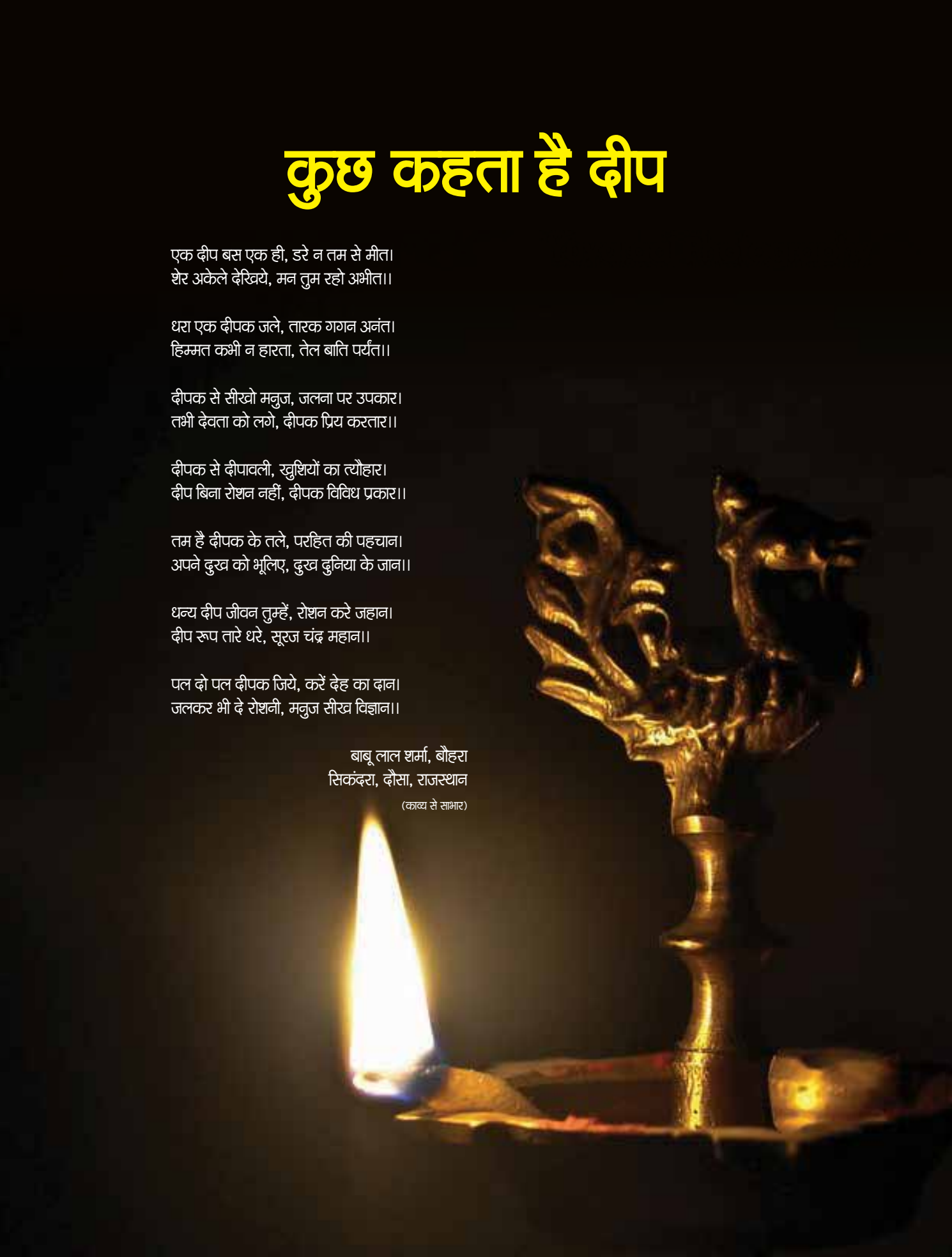

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

अक्टूबर 2022

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ.अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद
विवेक कालिया
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

दीपक पीर न जानई,
पावक परत पतंग।
तनु तो तिहि ज्वाला जरयो,
चित न भयो रस भंग ।
-सूरदास

- अध्यापक सपने ही नहीं बोते, उन्हें साकार करने का रास्ता भी दिखाते हैं- प्रधानमंत्री 5
- सोनीपत की अंजू दहिया को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 8
- अध्यापक समाज का शिल्पकार, बच्चों में पैदा करें देशभक्ति की भावना- राज्यपाल 9
- क्या हैं राज्य शिक्षक पुरस्कार के चयन-मापदंड? 18
- विद्यार्थियों ने योग दिवस पर बारालाचा दर्रे पर बनाया कीर्तिमान 22
- प्रेरणा बना ढाणी गोपाल का राजकीय विद्यालय 24
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- जीवट व्यक्तित्व के धनी हैं अध्यापक- अजय श्योराण 30
- डिजिटल बोर्ड के माध्यम से पढ़ते हैं 'शिक्षा सारथी' 31
- Cultural Fest : Honing the Talents of School Students 32
- Rainbows makes me happy when I am low 33
- Teacher Recognition in holistic progress card 34
- Role of Green Chemistry in Environment Management 36
- Popular Resources for Science Learning 39
- Continuous Professional Development in Mathematics.. 40
- Questions serve an important purpose 42
- Courses After +2 44
- Amazing Facts 48
- General Knowledge Quiz 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

जिनके किरदार से आती हो सदाक़त की महक उनकी तदरीस से पत्थर भी पिघल सकते हैं

शिक्षण कार्य को पवित्रतम कार्य माना जाता है। शिक्षक वह महाप्राण है जिसका समस्त जीवन आदर्श, त्याग और बलिदान का संगम होता है। उसका कार्यक्षेत्र केवल कक्षा-कक्षों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वह सच्चे अर्थों में राष्ट्र-निर्माता है। वह सदैव सत्यम् शिवम् सुन्दरम् की कामना करते हुए अपने मार्ग पर अग्रसर रहता है। वास्तव में शिक्षक के उत्तरदायित्व इतने व्यापक हैं कि उन्हें शब्दों की डोर से नहीं बाँधा जा सकता। इतना कह सकते हैं कि सत्य और शिवलोक की ऐसी रचना करना जिसमें चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश हो, अध्यापक का परम कर्त्तव्य है। वह भूत का पूर्ण ज्ञाता है, वर्तमान का विवेचन करने वाला है और भविष्य का दिग्दर्शक है। इसीलिए अध्यापन कार्य को अलौकिक कहा जाता रहा है।

गत माह 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर प्रदेश के सोनीपत की अंजू दहिया को माननीया राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार' से नवाज़ा गया। प्रदेश के 93 शिक्षकों को माननीय राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने अपने कर-कमलों से सम्मानित किया। निश्चित तौर पर ऐसे पुरस्कारों से उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों का हौसला बढ़ता है। उन्हें तो और अधिक जुनून से काम करने की प्रेरणा मिलती ही है, साथ ही अन्य शिक्षकों को भी प्रेरणा मिलती है कि वे भी उन जैसे बनें। 'शिक्षा सारथी' की ओर से सभी पुरस्कार विजेता शिक्षकों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ।

'शिक्षक दिवस' के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भी शिक्षकों के नाम संदेश दिया था। आशा है कि वह आपने अवश्य सुना होगा। यदि किसी कारणवश आप सुनने से वंचित रह गये हों तो इस अंक में उसे प्रकाशित किया जा रहा है। आपकी प्रिय पत्रिका का यह अंक आपको कैसा लगा- इस बारे में अपनी प्रतिक्रिया व सुझाव अवश्य भेजें।

- संपादक

अध्यापक सपने ही नहीं बोते, उन्हें साकार करने का रास्ता भी दिखाते हैं- प्रधानमंत्री

शिक्षक दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2022 के विजेताओं के साथ बातचीत की। प्रस्तुत है उस बातचीत का संपादित भाग

केंद्रीय मंत्रिमंडल के मेरे सहयोगी धर्मेंद्र जी, अन्नपूर्णा देवी जी और देशभर से आए मेरे सभी शिक्षक साथियो! आपके माध्यम से एक प्रकार से मैं आज देश के सभी शिक्षकों से भी बात कर रहा हूँ। देश आज भारत के पूर्व राष्ट्रपति और शिक्षाविद् डॉक्टर राधाकृष्णन जी को उनके जन्म दिवस पर आदरांजलि दे रहा है और ये हमारा सौभाग्य है कि हमारे वर्तमान राष्ट्रपति भी टीचर हैं। अपने जीवन के प्रारंभिक काल में उन्होंने शिक्षक के रूप में काम किया और वो भी दूर-सुदूर उड़ीसा के इंटीरियर इलाके में और वहीं से उनकी जिंदगी अनेक प्रकार से हमारे लिए सुखद संयोग है और ऐसे टीचर राष्ट्रपति के हाथ से आपका सम्मान हुआ है तो ये आपके लिए गर्व की बात है।

देखिए, आज जब देश आज़ादी के अमृतकाल के अपने विराट सपनों को साकार करने में जुट चुका है, तब शिक्षा के क्षेत्र में राधाकृष्णन जी के प्रयास हम सभी को प्रेरित करते हैं। इस अवसर पर राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त आप सभी शिक्षकों को, राज्यों में भी इस प्रकार के पुरस्कार दिए जाते हैं, उन सबको भी मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

साथियो, अभी मुझे अनेक शिक्षकों से बातचीत करने का मौका मिला। सब अलग-अलग भाषा बोलने वाले हैं, अलग-अलग प्रयोग करने वाले लोग हैं। भाषा अलग होगी, क्षेत्र अलग होगा, समस्याएँ अलग होंगी, लेकिन ये भी है कि इनके बीच में आप कितने ही अलग क्यों न हों, आप सबके बीच में एक समानता है और वो है आपका कर्म, आपका विद्यार्थियों के प्रति समर्पण, और ये समानता आपके अंदर जो सबसे बड़ी बात होती है। आपने देखा होगा जो सफल टीचर रहा होगा वो कभी भी बच्चे को ये नहीं कहता कि चल ये तेरे बस का रोग नहीं है, नहीं कहता है। टीचर की सबसे बड़ी जो स्ट्रेंथ होती है, वो पॉजिटिविटी होती है, सकारात्मकता। कितना ही बच्चा पढ़ने में-लिखने में बुरा हो...अरे करो बेटे हो जाएगा। अरे देखो उसने किया है तुम भी करो, हो जाएगा।

यानी आप देखिए उसको पता भी नहीं है, लेकिन टीचर के गुणों में होता है। वो हर बार पॉजिटिव ही बोलेगा, कभी किसी को नेगेटिव कमेंट करके निराश कर देना, हताश करना तो उसके नेचर में नहीं है। और एक टीचर की भूमिका ही है जो व्यक्ति को रोशनी दिखाने का

काम करती है। टीचर हर बच्चे के अंदर सपने बोता है और उसको संकल्प में परिवर्तित करने की ट्रेनिंग देता है कि देख ये सपना पूरा हो सकता है, तुम एक बार संकल्प लो, लग जाओ। आपने देखा होगा कि वो बच्चा सपनों को संकल्प में परिवर्तित कर देता है और टीचर ने जो रास्ता दिखाया है, उसे वो सिद्ध करके रहता है। यानी सपने से सिद्धि तक की ये पूरी यात्रा उसी प्रकाश पुंज के साथ होती है, जो किसी टीचर ने उसकी जिंदगी में सपना बोया था, दीया जलाया था, जो उसको कितनी ही चुनौतियों और अंधेरों के बीच में भी रास्ता दिखाता है।

और अब देश भी आज नए सपने, नए संकल्प ले करके एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है कि आज जो पीढ़ी है, जो विद्यार्थी अवस्था में हैं, 2047 में हिन्दुस्तान कैसा बनेगा, ये उन्हीं पर तय होने वाला है और उनका जीवन आपके हाथ में है। इसका मतलब हुआ कि 2047 को देश गढ़ने का काम आज जो वर्तमान में टीचर हैं, जो आने वाले 10 साल, 20 साल सेवाएँ देने वाले हैं, उनके हाथ में 2047 का भविष्य तय होने वाला है।

और इसीलिए आप एक स्कूल में नौकरी करते हैं, ऐसा नहीं है, आप एक क्लासरूम में बच्चों को पढ़ाते हैं, ऐसा नहीं है, आप एक सिलेबस को अटेंड करते हैं, ऐसा नहीं है। आप उसके साथ जुड़ करके, उसकी जिंदगी बनाने का काम और उसकी जिंदगी के माध्यम से देश बनाने का सपना ले करके चलते हैं। जब टीचर का सपना खुद का ही छोटा होता है, उसके दिमाग में 10 से 5 का ही भरा रहता है, आज चार पीरियड लेने हैं, वही रहता है तो वो, उसके लिए वो भले तनख्वाह लेता है, एक तारीख का वो इंतजार करता है, लेकिन उसको आनंद नहीं आता है। उसको वो चीजें बोझ लगती हैं। लेकिन जब उसके सपनों से वो जुड़ जाता है, तब ये कोई चीज उसको

बोझ नहीं लगती है। उसको लगता है कि अरे! मेरे इस काम से तो मैं देश का इतना बड़ा कंट्रीब्यूशन करूँगा। अगर मैं खेल के मैदान में एक खिलाड़ी तैयार करूँ और मैं सपना सँजोऊँ कि कभी न कभी मैं उसको दुनिया में कहीं न कहीं तिरंगे झंडे के सामने खड़ा हुआ देखना चाहता हूँ...आप कल्पना कर सकते हैं, आपको उस काम का आनंद कितना आएगा। आपको रात-रात जागने का कितना आनंद आएगा।

और इसलिए टीचर के मन में सिर्फ वो क्लासरूम, वो अपना पीरियड, चार लेने हैं, पाँच लेने हैं, वो आज आया नहीं तो उसके बदले में भी मुझे जाना पड़ रहा है, ये सारे बोझ से मुक्त हो करके मैं आपकी कठिनाइयाँ जानता हूँ, इसलिए बोल रहा हूँ...उस बोझ से मुक्त हो करके अगर हम इन बच्चों के साथ, उनकी जिंदगी के साथ जुड़ जाते हैं।

दूसरा, अल्टीमेटली हमें बच्चे को पढ़ाना तो है ही है, ज्ञान तो देना है, लेकिन हमें उसका जीवन बनाना है। देखिए, आइसोलेशन में, साइलोज में जीवन नहीं बनते। क्लासरूम में वो एक देख लें, स्कूल परिसर में कुछ और देखें, घर परिवेश में कुछ और देखें तो बच्चा कनफ्लिक्ट और कन्ट्राडिक्शन में फँस जाता है। उसको लगता है, माँ तो ये कह रही थी और टीचर तो ये कह रहे थे और क्लास में बाकी जो लोग थे, वो तो ऐसा बोल रहे थे। उस बच्चे को दुविधा की जिंदगी से बाहर निकालना ही हमारा काम है। लेकिन उसका कोई इंजेक्शन नहीं होता है कि चलो आज ये इंजेक्शन ले लो, तुम दुविधा से बाहर। टीका लगा दो, दुविधा से बाहर, ऐसा तो नहीं है। और इसके लिए टीचर के लिए बहुत जरूरी है कि कोई इंटीग्रेटिड एप्रोच हो उसका। कितने टीचर हैं, जो स्टूडेंट्स के परिवार को जानते हैं, कभी परिवार को मिले हैं, कभी उनसे पूछा है कि घर आकर क्या करता है, कैसा करता है, आपको क्या लगता है। और कभी ये बताया कि देखिए भाई, मेरी क्लास में आपका बच्चा आता है, इसमें ये बहुत बढ़िया ताकत है। आप थोड़ा इसको घर में भी जरा देखिए, बहुत आगे निकल जाएगा। मैं तो हूँ ही हूँ, टीचर के नाते मैं कोई कमी नहीं रखूँगा, लेकिन आप थोड़ी मेरी मदद कीजिए।

तो उस घर के लोगों के अंदर भी एक सपना बो करके आप आ जाते हैं और वो आपके सहयात्री बन जाते हैं। फिर घर भी अपने-आप में पाठशाला संस्कार की बन जाती है। जो सपने आप क्लासरूम में बोते हैं, वो सपने उस घर के अंदर फुलवारी बन करके पुलकित होने की शुरूआत कर देते हैं। और इसलिए हमारी कोशिश है क्या, और आपने देखा होगा एकाध स्टूडेंट आपको बड़ा ही परेशान करने वाला दिखता है। ये ऐसा ही है, समय खराब कर देता है, क्लास में आते ही पहली नजर वहीं जाती है तो आधा दिमाग वहीं खराब हो जाता है। मैं आपके भीतर से बोल रहा हूँ। और वो भी वैसा होता है कि पहली बेंच पर ही बैठेगा, उसको भी लगता है कि ये टीचर मुझे पसंद नहीं करते हैं तो पहले सामने आएगा वो। और आपका आधा समय वो ही खा जाता है।

ऐसे में उन बाकी बच्चों पर अन्याय हो जाए। कारण क्या है, मेरी पसंद-नापसंद। सफल टीचर वो होता है, जिसकी बच्चों के संबंध में, स्टूडेंट्स के संबंध में न कोई पसंद होती है, न कोई नापसंद होती है। उसके लिए वो सबके सब बराबर होते हैं। मैंने ऐसे टीचर देखे हैं, जिनकी अपनी संतान भी उसी क्लासरूम में है। लेकिन वे टीचर क्लासरूम में खुद की संतान को भी वही ट्रीटमेंट देते हैं, जो सब स्टूडेंट्स को देते हैं।

अगर चार लोगों को पूछना है, उसकी बारी आई तो उसको पूछते हैं, स्पेशियली उसको कभी नहीं कहते कि तुम ये बताओ, तुम ये करो, कभी नहीं। क्योंकि उनको मालूम है कि उसको एक अच्छी माँ की जरूरत है, एक अच्छे पिता की जरूरत है, लेकिन अच्छे टीचर की भी जरूरत है। तो वो भी कोशिश करते हैं कि घर में मैं माँ-बाप का रोल पूरा करूँगा, लेकिन क्लास में तो मुझे उसको टीचर-स्टूडेंट का ही मेरा नाता रहना चाहिए, वो घर वाला रिश्ता यहाँ आना नहीं चाहिए।

टीचर का बहुत बड़ा त्याग होता है, तब संभव होता है जी। ये अपने-आपको सँभाल करके इस प्रकार से काम करना, ये तब संभव होता है। और इसलिए हमारी जो शिक्षा व्यवस्था है, भारत की जो परंपरा रही है वो किताबों तक सीमित कभी नहीं रही है। वो तो एक प्रकार से एक सहारा है हमारे लिए। हम बहुत सी चीजों...और आज टेक्नोलॉजी के कारण ये बहुत संभव हुआ है। और मैं

देख रहा हूँ कि टेक्नोलॉजी के कारण बहुत बड़ी संख्या में हमारे गाँव के टीचर भी जो स्वयं टेक्नोलॉजी में उनकी पढ़ाई नहीं हुई है, लेकिन करते-करते वो सीख गए। और उन्होंने भी सोचा कि भई, क्योंकि उसके दिमाग में स्टूडेंट भरा पड़ा है, उसके दिमाग में सिलेबस भरा पड़ा है, तो वो चीजें, प्रॉडक्ट तैयार करता है जो उस बच्चे के काम आती हैं।

यहाँ सरकार में बैठे हुए लोगों के दिमाग में क्या रहता है, आँकड़े रहते हैं कि भई कितने टीचर भर्ती करना बाकी है, कितने स्टूडेंट का ड्रॉप आउट हो गया, बच्चियों का एनरोलमेंट हुआ कि नहीं हुआ, उनके दिमाग में वो रहता है, लेकिन टीचर के दिमाग में उसकी जिंदगी रहती है...बहुत बड़ा फर्क होता है। और इसलिए टीचर इन सारी जिम्मेदारियों को ढंग से उठा लेता है।

अब हमारी जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई है, इसकी इतनी तारीफ हो रही है, क्यों हो रही है, उसमें कुछ कमियाँ नहीं होंगी, ऐसा तो मैं दावा नहीं कर सकता हूँ, कोई नहीं दावा कर सकता है। लेकिन जो लोगों के मन में पड़ा था, उनको लगा यार, ये कुछ रास्ता दिख रहा है, ये कुछ सही दिशा में जा रहे हैं। चलिए, इस रास्ते पर हम चलते हैं।

हमें पुरानी आदतें इतनी घर कर गई हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति को एक बार पढ़ने-सुनने से बात बनने वाली नहीं है जी। महात्मा गांधी जी को कभी एक बार किसी ने पूछा था कि भई आपको कुछ मन में संशय हो, समस्याएँ हों तो क्या करते हैं। तो उन्होंने कहा, मुझे भगवद् गीता से बहुत कुछ मिल जाता है। इसका मतलब वो बार-बार उसको पढ़ते हैं, बार-बार उसके अर्थ बदलते हैं, बार-बार नए अर्थ दिखते हैं, बार-बार नया प्रकाशवान पुंज सामने खड़ा हो जाता है।

ये राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी, जब तक शिक्षा जगत के लोग उससे हर समस्या का समाधान उसमें है क्या, दस बार पढ़ें, 12 बार पढ़ें, 15 बार पढ़ें, सॉल्यूशन इसमें है क्या। उसको उस रूप में हम देखेंगे। एक बार आया है, चलो सर्कुलर आता है, वैसे देख लिया तो नहीं होगा। उसको हमें हमारी रगों में उतारना पड़ेगा, हमारे जेहन में उतारना पड़ेगा। अगर ये प्रयास होता है तो मुझे पक्का विश्वास है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने में हमारे देश के टीचर्स का बहुत बड़ा रोल रहा है। लाखों की तादाद में टीचर्स ने कंट्रीब्यूट किया है, इसको बनाने में।

पहली बार देश में इतना बड़ा मंथन हुआ है। जिन टीचर्स ने इसे बनाया है, उन टीचर्स का काम है कि सरकारी भाषा वगैरह बच्चों के लिए काम नहीं आती है, आपको माध्यम होना होगा कि ये जो सरकारी डॉक्यूमेंट्स हैं, वो उनके जीवन का आधार कैसे बनें। मुझे उसको ट्रांसलेट करना है, मुझे उसको फुलस्टॉप, कौमा के साथ पकड़ते हुए भी उसको सहज, सरल रूप में उसको समझाना है। और मैं मानता हूँ कि जैसे कुछ नाट्य प्रयोग होते हैं, कुछ essay writing होता है, कुछ व्यक्तित्व स्पर्धाएँ होती हैं, बच्चों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चर्चाएँ करनी चाहिए। क्योंकि टीचर उनको तैयार करेगा। जब वो बोलेंगे तो एकाध चीज नई भी उभर करके आएगी। तो ये एक प्रयास करना चाहिए।

आपको मालूम है कि अभी मैंने 15 अगस्त को आजादी के 75 साल का जो मेरा भाषण था तो उसका एक अपना अलग मेरा मिजाज भी था। तो मैंने 2047 को ध्यान में रख करके बातें कीं। और उसमें मैंने आग्रह किया कि पंच प्रण की चर्चा की। उन पंच प्रणों पर, हमारे क्लासरूम में इसकी चर्चा हो सकती है क्या? असेम्बली जब होती है, चलिए भई आज फलाना विद्यार्थी और फलाना टीचर पहले प्रण पर बोलेंगे, मंगल को दूसरे प्रण पर, बुधवार को तीसरे प्रण पर, शुक्रवार को पाँचवें प्रण पर और फिर अगले सप्ताह फिर पहले प्रण पर ये टीचर-ये टीचर। यानी सालभर, उसका अर्थ क्या है, हमें क्या करना है, ये पंच प्रण हमारे, हमारा भी तो प्रण तत्त्व होना चाहिए, हर नागरिक का होना चाहिए।

इस प्रकार से अगर हम कर सकते हैं तो मैं समझता हूँ उसकी सराहना हो रही है, सब लोग कह रहे हैं हाँ भई, ये पाँच प्रण ऐसे हैं कि हमारे आगे जाने का रास्ता बना देते हैं। तो ये पाँच प्रण उन बच्चों तक कैसे पहुँचें, उनके जीवन में कैसे आएँ, इसको जोड़ने का काम कैसे करें।

दूसरा, हिन्दुस्तान में अब कोई स्कूल में बच्चा ऐसा नहीं होना चाहिए, जिसके दिमाग में 2047 का सपना न हो। उसको कहना चाहिए, बताओ भई तुम, 2047 में तुम्हारी उम्र क्या होगी, उसको पूछना चाहिए। हिसाब लगाओ, तुम्हारे पास इतने साल हैं, तुम बताओ इतने सालों में तुम तुम्हारे लिए क्या करोगे और देश के लिए क्या करोगे। हिसाब लगाओ, 2047 के पहले तुम्हारे पास कितने साल हैं, कितने महीने हैं, कितने दिन हैं, कितने घंटे हैं, तुम एक-एक घंटे को जोड़ करके बताओ, तुम क्या करोगे। तुरंत इसका एक पूरा कैनवास तैयार हो जाएगा कि हाँ, आज एक घंटा चला गया, मेरा 2047 तो पास आ गया। आज दो घंटे चले गए, मेरा 2047 पास आ गया। मुझे 2047 में ऐसे जाना है, ऐसे करना है।

अगर ये भाव हम बच्चों के मन-मंदिर में भर देते हैं, एक नई ऊर्जा के साथ, एक नई उमंग के साथ, तो बच्चे लग जाएँगे इसके पीछे। और दुनिया में, प्रगति उन्हीं की होती है जो बड़े सपने देखते हैं, बड़े संकल्प लेते हैं और दूर की सोच करके जीवन को खपा देने के लिए तैयार रहते हैं... और मेरा भरोसा हमारे शिक्षक बंधुओं पर ज्यादा है, शिक्षा जगत् पर ज्यादा है। अगर आप इस प्रयास में जुट जाएँ, मुझे पक्का विश्वास है हम उन सपनों को पार कर सकते हैं और आवाज गाँव-गाँव से उठने वाली है जी! अब देश रुकना नहीं चाहता है। अब देखिए दो दिन पहले- 250 साल तक जो हम पर राज करके गए थे, 250 साल तक...उनको पीछे छोड़ करके हम दुनिया की इकोनॉमी में आगे निकल गए। 6 नंबर से 5 नंबर पर आने का जो आनंद होता है, उससे ज्यादा आनंद इसमें हुआ, क्यों? 6 से 5 होते तो होता थोड़ा आनंद, लेकिन ये 5 स्पेशल है। क्योंकि हमने उनको पीछे छोड़ा है, हमारे दिमाग में वो भाव भरा है, वो तिरंगे वाला, 15 अगस्त का।

15 अगस्त के तिरंगे का जो आंदोलन था, उसके प्रकाश में ये 5वाँ नंबर आया है और इसलिए उसके अंदर वो जिद भर गई है कि देखा, मेरा तिरंगा और फहरा रहा है। ये मिजाज बहुत आवश्यक है और इसलिए 1930 से 1942 तक देश का जो मूड था, देश के लिए जीने का, देश के लिए जूझने का, और जरूरत पड़ी तो देश के लिए मरने का, आज वो मिजाज चाहिए।

मैं मेरे देश को पीछे नहीं रहने दूँगा। हजारों साल की गुलामी से बाहर निकले हैं, अब मौका है, हम रुकेंगे नहीं, हम चल पड़ेंगे। ये मिजाज पहुँचाने का काम, सभी हमारे शिक्षक वर्ग के द्वारा हो तो ताकत अनेक गुना बढ़ जाएगी।

आपने इतना काम कर-करके अवार्ड प्राप्त किए हैं, इसलिए मैं ज्यादा काम दे रहा हूँ। जो काम करता है, उसी को काम देने का मन करता है, जो नहीं करता है, उसको कौन देता है? और शिक्षक का मेरा भरोसा रहा है कि वो जिम्मा लेता है तो पूरा करता है। तो इसलिए मैं आप लोगों को कहता हूँ। मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद!

- शिक्षा सारथी डेस्क

सोनीपत की अंजू दहिया को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार

एक आदर्श शिक्षक वह होता है जो अपने शिक्षक पद के लिए अपने आप को समर्पित कर देता है। अपने पद की गरिमा को ध्यान में रखता है और अपने छात्रों की राह आसान करता है। इसी कथन को चरितार्थ करने वाली प्राध्यापिका अंजू दहिया को वर्ष 2022 के लिए राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा 5 सितम्बर, 2022 को सम्मानित किया गया है। वर्ष 2014 से अगस्त 2022 तक राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बड़वासनी, सोनीपत में रसायन-शास्त्र विषय की प्राध्यापिका अंजू दहिया ने विषय को आसान बनाने की दिशा में सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने रसायन शास्त्र विषय को खेल व कविता जैसी गतिविधियों से आसान बना दिया है, जिससे छात्र विषय को समझकर लंबे समय तक याद रख पाते हैं।

वर्तमान में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय थाना कलां (सोनीपत) में कार्यरत अंजू दहिया के जीवन के सफर पर नजर डालें, तो इनका पूरा परिवार शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुका हैं और वर्तमान में इनके पति मनीष भी शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं । वर्ष 2013 में पीजीटी रसायन शास्त्र के पद पर कार्यग्रहण के पश्चात् अंजू दहिया ने छात्रों में इस विषय के प्रति रुचि जगाने के प्रयास शुरू किये और इसके सकारात्मक परिणाम भी मिले। अंजू ने अपने शिक्षण कार्य को खेल गतिविधि आधारित बनाने पर जोर दिया।

शिक्षण में नवाचार-

इनके द्वारा शिक्षण को आसान एवं रुचिकर बनाने के लिए अनेक नवाचारी प्रयोग किये गए हैं। इन्होंने छात्रों के लिए म्यूजिकल पीरियॉडिक टेबल बनाकर और केमिकल फार्मूलों को लेकर स्पीनिंग गेम बनाकर शिक्षण कार्य को रुचिकर बनाया है। अंजू दहिया ने छात्रों के साथ मिलकर टैक्सटाइल कचरे के निस्तारण और पुनः प्रयोग पर प्रोजेक्ट वर्क पर भी कार्य किया है। इन्होंने अपने विद्यालय में विषयों पर क्यूआर कोड तैयार करवा के लगवाए हैं।

सामाजिक कार्य-

शिक्षण कार्य के साथ-साथ अंजू दहिया की सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय भागीदारी रही है। विद्यालय में छात्रों की आवश्यकता को देखते हुए इन्होंने अपनी पहली एलटीसी विद्यालय में ही ख़र्च कर दी और वाटर कूलर की व्यवस्था की। विभिन्न सामाजिक मुद्दों को लेकर सामाजिक जागरूकता के लिए छात्रों के साथ मिलकर नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया जाता रहा है। विद्यालय में स्किल डेवलपमेंट और वोकेशनल ट्रेनिंग कैम्प का आयोजन भी इनके द्वारा किया जाता रहा है ।

एडवेंचर कैंप-

बच्चों में पर्वतारोहण जैसी साहसिक गतिविधियों में रुचि जगाने का कार्य अंजू दहिया बखूबी निभा रही हैं। हिमालय क्षेत्र की फ्रेंडशिप पीक पर 22 लड़कियों के साथ वर्ष 2018 में सफलतापूर्वक पर्वतारोहण कर चुकी हैं। वर्ष 2021 में लाहौल में यूनम पीक पर एडवेंचर कैंप में भाग ले चुकी हैं जिसमें 22 दिव्यांग छात्रों सहित कुल 66 छात्रों ने भाग लिया था। इसके अतिरिक्त केरल में आयोजित कॉस्टल स्टडी कैंप में भी इनके नेतृत्व में 8 विद्यार्थियों ने भाग लिया था।

सांस्कृतिक कार्यक्रम-

अंजू दहिया अपने आप में एक बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। कैमिस्ट्री जैसे विषय को रचनात्मकता के साथ पढ़ाने के अतिरिक्त हरियाणवी संस्कृति के प्रति भी गहरी रुचि रखती हैं। एक ओर जहाँ इनके नेतृत्व में छात्राओं ने बाल महोत्सव में राज्य स्तर तक अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है, वहीं स्वयं भी विभाग द्वारा आयोजित रंगोत्सव में भाग लेती रहती हैं।

ई - कंटेंट-

लॉकडाउन के दौरान जब सभी गतिविधियों पर विराम लग गया था और सभी स्कूल बंद थे, उस दौरान अंजू दहिया द्वारा छात्रों के अंदर अपने विषय के जरिये वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए ऑनलाइन माध्यम का सहारा लिया गया और वीडियो व पीपीटी के जरिये छात्रों तक पहुँचाने में सफल रहीं। हरियाणा के एजुसेट चैनल पर भी इनके 10 पाठों के वीडियो का प्रसारण हुआ।

अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिभागिता-

इन्होंने मई-2022 में उज्बेकिस्तान में नामांगन टेक्निकल यूनिवर्सिटी द्वारा ट्रांसलेशन ऑफ़ फॉरेन लैंग्वेज विषय पर आयोजित इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में भाग लिया और अपना पेपर प्रस्तुत किया। इस दौरान इन्होंने भारतीय दल के साथ उज्बेकिस्तान के विभिन्न प्रांतों के स्कूलों का भी अवलोकन किया और वहाँ की शिक्षा प्रणाली को जाना।

हरपाल आर्य, प्राथमिक शिक्षक
राजकीय कन्या प्राथमिक विद्यालय
काकडोली हुक्मी, बाढ़ड़ा,
जिला- चरखी दादरी

अध्यापक समाज का शिल्पकार, बच्चों में पैदा करें देशभक्ति की भावना- राज्यपाल

93 शिक्षकों को मिला राज्य शिक्षक पुरस्कार

सुभाष शर्मा

हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने शिक्षक दिवस के अवसर पर पंचकूला के सेक्टर-5 स्थित इंद्रधनुष ऑडिटोरियम में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित राज्य शिक्षक पुरस्कार समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रदेश के 93 शिक्षकों को सम्मानित किया। ये पुरस्कार वर्ष 2020 व 2021 के लिए दिए गए। इस अवसर पर उन्होंने स्कूली बच्चों की स्वास्थ्य जाँच के लिये आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत एक नई स्कूल स्वास्थ्य योजना 'सेहत' का शुभारंभ भी किया।

इस अवसर पर शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल व अंबाला लोकसभा सांसद श्री रतनलाल कटारिया भी उपस्थित थे। श्री दत्तात्रेय ने कहा कि पूरा देश महान विद्वान, आदर्श शिक्षक तथा देश के पूर्व राष्ट्रपति भारत-रत्न सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन को याद कर रहा है। सम्मानित हुए शिक्षकों को शुभकामनाएँ देते हुए श्री दत्तात्रेय ने कहा कि उन्होंने एक शिक्षक के साथ-साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बेहतरीन कार्य किया है। उन्होंने कहा कि शिक्षक बच्चों के सर्वांगीण विकास पर काम करता है।

राज्यपाल ने अध्यापकों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि आप आत्मविश्वास से आगे बढ़ें, आप भी राष्ट्रपति बन सकते हैं। डॉ. राधाकृष्णन का मानना था शिक्षा से ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। अध्यापक समाज का शिल्पकार है और देश निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों को बच्चों को शिक्षित करने के साथ ही उनका मनोबल भी बढ़ाना चाहिए।

श्री दत्तात्रेय ने कहा कि शिक्षक को बच्चों की शिक्षा व देखभाल के लिए एक माँ की तरह कार्य करने की आवश्यकता है। अपने विद्यार्थी जीवन को याद करते हुये उन्होंने कहा कि उन्हें अपने भौतिकी के अध्यापक श्री रामैया गारू और तेलुगू शिक्षक स्वर्गीय श्री शेषचार्य आज भी याद हैं। वे आदर्श शिक्षक थे, जिनके शब्द छात्रों के दिल और दिमाग पर एक अमिट छाप छोड़ते थे। श्री

दत्तात्रेय ने कहा कि उनके राज्यपाल बनने तक के सफर में उनके गुरुओं द्वारा दी गई प्रेरणा व संस्कारों का अहम योगदान रहा है। उन्होंने शिक्षकों से आह्वान किया कि वे किताबी ज्ञान के साथ-साथ बच्चों को अच्छे संस्कार भी सिखायें। भारतीय संस्कृति में संस्कारों का बहुत बड़ा महत्त्व है। उन्होंने कहा कि यह प्रसन्नता का विषय है कि चाहे सीबीएसई बोर्ड हो, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड हो या आईसीएसई बोर्ड हर परीक्षा में लड़कियाँ बाजी मारती दिखाई दे रही हैं।।

उन्होंने कहा कि डॉ. राधाकृष्णन ने 40 साल तक शिक्षक के रूप में काम किया, फिर उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति बने। राज्यपाल ने अवार्ड प्राप्त करने वाले शिक्षकों को शुभकामनाएँ दीं और उनका हौसला बढ़ाया।

उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति शिक्षण-तंत्र में आमूल-चूल परिवर्तन लाएगी। इसमें नैतिक शिक्षा पर

जोर दिया गया है। इस नीति को केंद्र सरकार ने 2030 तक लागू करने का फैसला किया है, लेकिन हरियाणा ने इसे 2025 तक लागू करने की घोषणा की है। कोविड में हमारे गुरुजन ने बहुत मेहनत की है। विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने शिक्षण कार्य को थमने नहीं दिया और विद्यार्थियों के साथ किसी न किसी प्रकार से संपर्क बनाए रखा। इसके लिए राज्यपाल जी ने शिक्षक समाज को बधाई दी।

उन्होंने कहा कि भारत के लोग दुनिया में बहुत बड़े-बड़े पदों पर पहुँचे हैं। हमें अपनी मानव-शक्ति को इस प्रकार शिक्षित-प्रशिक्षित करना है कि उनके लिए रोज़गार की कमी न रहे।

राज्यपाल ने इस बात के लिए हर्ष प्रकट किया कि आज महिलाएँ काफी आगे बढ़ चुकीं और हर क्षेत्र में सशक्त पहचान बना रही हैं। शिक्षक सम्मान समारोह में 31 अवार्ड महिला अध्यापकों को मिले हैं।

शिक्षक दिवस गुरुओं के समर्पण को पहचान देने का दिन- कँवर पाल

हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल ने शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रदेश के सभी शिक्षकों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि जीवन में हम सब की सफलता के पीछे हमारे शिक्षकों का ही हाथ होता है जोकि हमारे छात्र जीवन से ही हमें सही दिशा व मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

शिक्षामंत्री ने कहा कि एक शिक्षक को राष्ट्रनिर्माता के रूप में भी जाना जाता है। भारत में गुरु-शिष्य की जैसी परम्परा आज भी कायम है, वैसी पूरे विश्व में कहीं भी देखने को नहीं मिलती है।

शिक्षामंत्री ने कहा कि देश को आगे बढ़ाने व विकसित करने के लिए बहुत सी योजनाएँ चलाई जाती हैं, परंतु देश को आगे ले जाने व विकसित करने में शिक्षक की जो भूमिका है, वह सबसे महत्त्वपूर्ण कही जा सकती है। अध्यापक का स्थान कोई नहीं ले सकता। केवल अध्यापक ही एक व्यक्ति है जो विद्यार्थियों को देश-समाज का जिम्मेदार नागरिक बनाता हैं। इसलिए शिक्षक को समाज की, देश के विकास की रीढ़ की हड्डी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। देश को आगे ले जाने में शिक्षक का योगदान अतुलनीय है।

नवाचारी प्रयोगधर्मिता के पर्याय रसायनशास्त्री सत्यवीर नाहड़िया

रेवाड़ी जिले के गाँव नाहड़ में जन्मे, रेवाड़ी रह रहे रसायनशास्त्र प्राध्यापक सत्यवीर यादव को साहित्यिक जगत् में सत्यवीर नाहड़िया के नाम से जाना जाता है। वर्ष 2020 के लिए उक्त पुरस्कार के लिए अलंकृत किए गए श्री यादव बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। एक ओर जहाँ रेवाड़ी जिले के बोड़ियाकमालपुर तथा खोरी के सरकारी स्कूलों से कार्यकाल के दौरान दो दर्जन से ज्यादा विद्यार्थियों का चयन आईआईटी तथा नीट परीक्षाओं में हुआ, वहीं उनके निर्देशन में तैयार की गई कला उत्सव, कानूनी साक्षरता, सांस्कृतिक उत्सव, विज्ञान प्रदर्शनी, रोल प्ले, विज्ञान ड्रामा,गीता जयंती, सड़क सुरक्षा, युवा संसद आदि की टीमों ने राज्य स्तर पर विजेता रह कर लोहा मनवाया है।

वे एससीईआरटी, गुरुग्राम की नई शिक्षा नीति समिति, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी के शैक्षणिक प्रकोष्ठ के सदस्य के अलावा हरियाणा स्कूल लेक्चरर्ज एसोसिएशन (हसला) के शैक्षणिक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष रह चुके हैं। शिक्षा तथा साहित्य के राज्यस्तरीय कार्यक्रमों की कुशल संचालन, संयोजन तथा संपादन में महारत हासिल रखने वाले श्री नाहड़िया आशुकवि के रूप में चर्चित हैं।

हरियाणा साहित्य अकादमी पुरस्कार-2018 से अलंकृत श्री नाहड़िया का शिक्षा के साथ साहित्य, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट योगदान रहा है, जिसमें विभिन्न विधाओं में हिंदी तथा हरियाणवी में उनकी करीब दो दर्जन पुस्तकें, चार हरियाणवी फिल्मों में गीत एवं संवाद, चंडीगढ़ से प्रकाशित दैनिक ट्रिब्यून में गत डेढ़ दशक से दैनिक स्तंभ का प्रकाशन, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के समक्ष हरियाणा वंदना की प्रस्तुति, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से काव्य पाठ, हरियाणवी आज़ादी गीत का लेखन, उनके लेखन पर शोध कार्य, सात संगीत एल्बम, राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में पाँच हजार से ज्यादा प्रकाशित आलेखों व रचनाओं से बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सहज ही समझा जा सकता है।

शिक्षा सारथी से बातचीत करते हुए वे कहते हैं कि हर बच्चे में प्रतिभा होती है। उसे पहचान कर विकसित करना शिक्षक का दायित्व है। पुरस्कार से काम का रेखांकन व प्रोत्साहन हुआ है। साथ ही बढ़ी जिम्मेदारी और जवाबदेही के प्रति भी निरंतर प्रतिबद्धता जारी रहेगी।

पुरस्कार से और अधिक ऊर्जा मिलती है डॉ.ओमप्रकाश कादयान

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, मोहम्मदपुर रोही, फतेहाबाद में कार्यरत शिक्षक तथा प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.ओमप्रकाश कादयान का मानना है कि माँ-बाप अपने बच्चों को हमारे भरोसे विद्यालय भेजते हैं। हमारा कर्तव्य बनता है कि हम विद्यार्थियों को बेहतर तरीके से शिक्षा दें। उन्हें संस्कारवान भी बनाएँ। शिक्षक ओमप्रकाश कादयान पूरी ऊर्जा के साथ अपनी जिम्मेदारियाँ निभा रहे हैं। 25 वर्षों की नौकरी के दौरान इनका बोर्ड परीक्षा परिणाम सौ प्रतिशत रहा है। बच्चों में उत्साह भरने के लिए ये उनकी कई तरह की प्रतिस्पर्धाएँ करवा कर आकर्षक पुरस्कार भी बच्चों को देते रहते हैं। रेडक्रॉस, स्काउट्स एंड गाइड्स, एडवेंचर गतिविधियों में बच्चों की भागीदारी करवाना, उन्हें लंबे-लंबे टूर करवाना, विद्यार्थियों को जल व पर्यावरण संरक्षण से जोड़ना, विद्यालय प्रांगण को स्वच्छ रखने की प्रेरणा देना, विभिन्न प्रतियोगिताओं की तैयारी करवाना इनकी प्रवृत्ति का हिस्सा रहा है।

ओमप्रकाश कादयान शिक्षा विभाग द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों में पूरा सहयोग करते हैं। विभिन्न अवसरों पर रंगोली बनाना, प्रतियोगिताओं में सहयोग करना इन्हें अच्छा लगता है। डॉ.कादयान एक प्रसिद्ध लेखक तथा फोटो आर्टिस्ट भी हैं। इनकी विभिन्न विधाओं पर अब तक करीब 12 पुस्तकें छप चुकी हैं। हजारों आलेख व छायाचित्र पत्र-पत्रिकाओं में छप चुके हैं। रेडियो व दूरदर्शन पर अनेक कार्यक्रम प्रसारित हो चुके हैं। हरियाणा इनसाइक्लोपीडिया में 25 गाँव की कहानियाँ, पाँच आलेख, करीब 140 फोटो शामिल हैं। देश के कई बड़े शहरों में ये पेंटिंग व फोटो प्रदर्शनी लगा चुके हैं। हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 5,279 मीटर ऊँची फ्रेंडशिप पीक तथा 6,111 मीटर ऊँची यूनम पीक फतेह अभियान में शामिल हो कर अपना, ज़िले का व राज्य का नाम रोशन कर चुके हैं। इसके साथ-साथ विद्यालय सौंदर्यकरण व स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण में इनकी खास भूमिका है। अब तक ये करीब 20,000 पौधे लगाकर बड़े कर चुके हैं। विद्यालय निर्माण में इनकी खास भूमिका है। मिड-डे मील सँभालना, लॉकडाउन में वीडियो बना-बनाकर विद्यार्थियों की पढ़ाई सुचारु रूप से जारी रखना व ड्रॉपआउट बच्चों को दोबारा से विद्यालय में लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने कहा कि अगर हमारा देश विश्वगुरु कहलाया, चाहे वो व्यापार की दृष्टि से या अन्य किसी क्षेत्र में, उसका मूल कारण यहाँ शिक्षकों का बेहद सम्मान रहा है। उन्होंने कहा कि हम लोग अकसर पढ़ते हैं कि एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण था, जो शिक्षक था। परंतु जब राजा के दरबार में वह गरीब ब्राह्मण जाता था, तो राजा भी राजगद्दी से खड़ा होकर उसे सम्मान देता था। यह सम्मान एक शिक्षक का ही सम्मान था। जिस समाज में शिक्षकों के प्रति ऐसा सम्मान होगा, उस समाज को विकास के मार्ग पर अग्रसर होने से कोई रोक नहीं सकता।

उन्होंने झज्जर जिले के एक गाँव के प्रवास के बारे बताते हुए कहा कि उस गाँव के लोगों ने सामूहिक रूप से एक बड़ी राशि इकट्ठी की। विभाग से प्राप्त राशि और ग्रामीणों द्वारा एकत्रित राशि से शिक्षकों व गाँव वालों ने मिलकर अपने विद्यालय का रूपरंग ही बदल डाला। विद्यालय के अध्यापकों से बात करें तो वे ग्रामीणों के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं, दूसरी ओर ग्रामवासी भी विद्यालय के अध्यापकों की प्रशंसा करते नहीं थक रहे हैं। गाँव के लोग तो यह भी कहने लगे हैं कि उनके विद्यालय के अध्यापकों का अन्यत्र स्थानांतरण न किया जाए, उन्हें उनके विद्यालय में ही रखा जाए। अगर ऐसी स्थिति प्रदेश के सभी गाँवों-शहरों की बन जाए तो निश्चित रूप से शिक्षण के लिए अनुकूल स्थितियाँ बन जाएँगी।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि देश का संपन्न होना ही

पर्याप्त नहीं है बल्कि उसका संस्कार युक्त होना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि मंच पर बैठे-बैठे उन्हें पाँचवीं कक्षा में पढ़ाई गई बातें याद आ रही थीं। इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी उन बातों की मन-मस्तिष्क पर अनूठी छाप आज भी कायम है। उनके शिक्षकों ने जो संस्कार दिए थे, अच्छा व्यक्ति बनने की जो बातें बताई थीं, वे सदा मन में बसी रहती हैं।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थी के मन पर शिक्षक द्वारा कही गई बात का माता-पिता के द्वारा कही गई बात से अधिक असर होता है। बच्चा उसी बात को सही मानता है जो उसके शिक्षक द्वारा बताई गई हो, चाहे उसमें किसी तथ्य की कमी ही क्यों न हो। शिक्षक द्वारा दिए गए संस्कारों व प्रेरणाओं से ही बड़े-बड़े राजा महाराजाओं ने ख्यातियाँ अर्जित कीं। शिक्षण साधारण कार्य नहीं है, यह वास्तव में राष्ट्र निर्माण का काम है।

शिक्षा मंत्री ने कहा कि शिक्षक वर्ग का समाज के विकास में एक अहम योगदान होता है और सही मायने में शिक्षित व्यक्ति ही देश-समाज को आगे ले सकते हैं।

उन्होंने सभी शिक्षकों से आग्रह किया है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का क्रियान्वयन जमीनी स्तर पर करने की पहल करें और आत्मनिर्भर व आधुनिक भारत के निर्माण में अपना अहम योगदान दें।

उन्होंने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे विद्यार्थियों को अपनी जड़ों से तो जोड़ेगी ही, इसके साथ उन्हें वैश्विक नागरिक बनने का भी पूरा सामर्थ्य देगी क्योंकि इस नीति में नवाचार पर बल देते हुए राष्ट्रीय अनुसंधान मंच (एनआरएफ) का गठन करने की बात कही गई है जो अति महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि अनुसंधान को जितना बल मिलेगा उतना ही हम देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे ले जाने में सक्षम होंगे।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल के नेतृत्त्व में हरियाणा सरकार ने शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिये अनेक कदम उठाये हैं। हरियाणा देश का ही नहीं संभवतः विश्व का पहला प्रदेश है जहाँ 10वीं व 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों और शिक्षकों को 5 लाख टैब निःशुल्क प्रदान किये गये हैं। उन्होंने कहा कि कुछ बच्चे प्रतिभावान होने के बावजूद संसाधन के अभाव में पीछे रह जाते हैं। उन्हें सरकार द्वारा संसाधन उपलब्ध करवाये गये हैं, जिसके सुपरिणाम शीघ्र ही दिखाई देंगे। सरकार के इस कदम को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहना मिल रही है। उन्होंने कहा कि यह राजनीतिक लाभ लेने के लिए या वोट अर्जित करने के लिए दी गई सुविधा नहीं है, बल्कि निःशुल्क टैबलेट देना राष्ट्रनिर्माण के लिए किया गया कार्य है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के बहुत से ऐसे बच्चे हैं जो प्रतिभावान तो हैं परंतु संसाधनों के अभाव में उनकी प्रतिभा उभर नहीं पाती। ऐसे बच्चों के लिए संसाधन उपलब्ध कराने का दायित्व सरकार बखूबी कर रही है। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए अनेक ऐसी योजनाएँ आरंभ की गई हैं जो विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हो रही हैं।

सरकार ने छात्रों को संसाधन उपलब्ध करवाए। उसका परिणाम सुपर-100 कार्यक्रम के विद्यार्थियों ने दिखाना शुरू कर दिया है। अनेक बच्चे जेईई में पास हुए हैं तथा देश की विभिन्न आईआईटी से उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अभावग्रस्त परिवारों के बच्चे भी श्रेष्ठ संस्थानों से मैडिकल की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सरकारी विद्यालयों पर आमजन का विश्वास बढ़ा है और निकट भविष्य में यह और भी बढ़ेगा। उन्होंने पंचकूला के सार्थक समेकित गवर्नमेंट मॉडल

सीनियर सैकेंडरी स्कूल का जिक्र करते हुए कहा कि इस विद्यालय में अपने विद्यार्थियों को प्रवेश दिलाने के लिए हर कोई लालायित दिखाई दे रहा है। कुछ लोग सिफारिश कराने की कोशिश भी करते हैं। ऐसा इसलिए है कि इस विद्यालय ने अपनी एक विशेष पहचान बनाई है, इसका श्रेय विद्यालय के अध्यापकों को जाता है। बाकी विद्यालयों को भी ऐसे विद्यालय से प्रेरणा लेनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि सरकारी इस बात के लिए प्रतिबद्ध है कि प्रदेश के हर बच्चे को गुणवतापूर्ण शिक्षा मिले। उनकी प्रतिभा का विकास हो तथा वे प्रगति की नई बुलंदियों पर पहुँच कर प्रदेश का नाम रोशन करें।

शिक्षा के क्षेत्र में छुए हैं नये आयाम- डॉ. महावीर सिंह

शिक्षक दिवस पर प्रदेश के सभी शिक्षकों को बधाई देते हुए विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह ने कहा कि शिक्षक दिवस अध्यापक समाज के लिए बहुत ही गौरव का दिन है। गुरु का दर्जा दुनिया में सबसे उच्च रहा है। हमारे देश में गुरु को गोविंद से भी बड़ा कहा गया है।

उन्होंने कहा कि गुरु का दर्जा समय के साथ फीका न पड़े, इसकी चमक बरकरार रहे, सम्मान कम न हो, इसलिए प्रत्येक वर्ष 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

डॉ. महावीर सिंह ने कहा कि शिक्षकों के सम्मान में आयोजित राज्य स्तरीय समारोह के माध्यम से शिक्षा जगत से जुड़े सभी गुरुजन के साथ संपर्क स्थापित करके उन्हें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

उन्होंने कहा कि शिक्षक का दर्जा अतीत में भी महत्त्वपूर्ण था, आज भी है तथा सदैव रहेगा। भावी पीढ़ियों के निर्माण में उनकी भूमिका सदैव महत्त्वपूर्ण रहेगी।

उन्होंने उम्मीद जताई कि सभी शिक्षक एक दूसरे के अनुभवों से सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करके समाज निर्माण में और भी बेहतर भूमिका निभाएँगे। उन्होंने कहा कि राज्य स्तरीय शिक्षक दिवस पर कुछ चुनिंदा लोगों को आमंत्रित किया गया है। ये वे लोग हैं जिन्होंने विशिष्ट प्रयोगों, नवाचारों से शिक्षण को नई उँचाई प्रदान की है। ये गुरुजन अन्य शिक्षकों के लिए भी प्रेरणा बनेंगे। उन्होंने कहा कि सभी शिक्षक यह भी संकल्प लें कि उनका अपने विद्यार्थियों के प्रति सदैव आत्मीयता से भरा संबंध रहे।

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने कहा कि पिछले दो सालों में कोविड महामारी के चलते यह कार्यक्रम आयोजित नहीं हो पाया था, इसलिए संयुक्त रूप से दो वर्षों- 2020 व 2021 के पुरस्कार दिए जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के दौरान जब विद्यालयों में ताले लग गए थे, जीवन की गति थमती मालूम होने लगी थी, उस दौरान भी विभाग ने शिक्षा की गति को मंद न होने दिया। महामारी के दौरान भी शिक्षकों ने न केवल शिक्षा प्रणाली को चालू रखा, बल्कि इसमें नये अध्याय भी जोड़े। कोविड के दौरान जब एक दूसरे से मिलजुल भी नहीं पा रहे थे, संचार की प्रणाली से तकनीक से फायदा उठाकर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों ने एक नई मिसाल कायम की। इसके लिए उन्होंने सभी शिक्षकों को बधाई दी।

उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग के लिए खुशी की बात यह है कि प्रदेश सरकार पूरी गंभीरता से शिक्षा के विकास के लिए प्रतिबद्धता दर्शा रही है। पूरे भारत में हरियाणा प्रदेश एकमात्र राज्य है जिसने 5 लाख टैबलेट बच्चों को दिए हैं। प्रदेश के गुरुजन को भी टैबलेट दिए गए है।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल का यही ध्येय है कि संसाधनों के अभाव में कोई बच्चा पढ़ाई में पिछड़ न जाए। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान विभाग ने यह बात महसूस की कि कोविड के कारण शिक्षण को जारी रखने के लिए अनेक माध्यमों एजुसेट, टेलीविजन इत्यादि का सहारा लिया गया ताकि बच्चे शिक्षक से जुड़ पाएँ। नई तकनीक के जरिए विद्यार्थी और अध्यापक आपस में जुड़े रहे।

उन्होंने कहा कि हरियाणा प्रदेश के लिए नई तकनीक के साथ जोड़ने के लिए विशेष सॉफ्टवेयर से सुसज्जित टैबलेट दिए गए हैं, जो एक महत्त्वपूर्ण कदम है। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले अनेक विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है, वे साधन संपन्न नहीं होते हैं, इसी को देखते हुए सरकार ने यह भी फैसला किया कि इन टैबलेट को चलाने के लिए दो जीबी डाटा प्रतिदिन निःशुल्क दिया जाए।

उन्होंने कहा कि इन टैबलेट के माध्यम से अध्ययन-अध्यापन पहले से ज्यादा प्रभावी बना है। तकनीक के माध्यम से विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों का ज्ञान पाकर प्रदेश के बच्चे आगे बढ़ रहे हैं। इसके साथ-साथ इन टैबलेट के प्रयोग को लेकर मॉनिटरिंग का जो सिस्टम बनाया गया है, वह अपने आप में अनूठा है। पूरे हिन्दोस्तान में हरियाणा पहला सूबा है जिसमें बच्चों की लर्निंग आउटपुट को मापने के लिए यह विशेष सॉफ्टवेयर वाले टैबलेट बच्चों को मुहैया कराए गए हैं। उन्होंने सभी शिक्षकों से इस तकनीक का बढ़-चढ़ कर इस्तेमाल करने का आग्रह करते हुए कहा कि वे विद्यालय के सभी 10वीं, 12वीं के विद्यार्थियों के इसके अधिक से अधिक प्रयोग करके शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने कहा कि भारत सरकार की नई शिक्षा नीति-2020 से क्रांतिकारी बदलाव सामने आ रहे हैं। दो चीजें सामने आई हैं कि हम लोग अभी तक पहली कक्षा से पढ़ाने की बात करते थे, लेकिन राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत 3 से 5 वर्ष तक के बच्चों को भी शिक्षण से जोड़ना होगा। बच्चा पहले आँगनवाड़ी में जाता था। आँगनवाड़ी में बच्चे के स्वास्थ्य से संबंधित बहुत सी चीजें होती थीं, लेकिन साथ-साथ में फॉर्मल एजुकेशन या प्री- स्कूल ऐजुकेशन की बात को नई शिक्षा नीति में जोड़ा गया है। इसके साथ एक और बात भारत सरकार ने पार्लियामेंट में 2009 में एक एक्ट पास किया जिसके अनुसार हर एक बच्चे का यह बुनियादी अधिकार है कि वह कम से कम आठवीं पास होना चाहिए। 14 वर्ष की आयु तक उसे अनिवार्य शिक्षा दी जाए। नई शिक्षा नीति शिक्षा को और ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए शिक्षा विभाग व शिक्षकों को यह प्रयास करना है कि विद्यार्थी आठवीं तक ही नहीं, बल्कि नौवीं से बाहरवीं तक की शिक्षा को पूर्ण करके ही विद्यालय से जाए। नई शिक्षा नीति के तहत विद्यालयी शिक्षा का सार्वभौमीकरण करके इसे सबके लिए अनिवार्य किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि शिक्षकों का यह दायित्व है कि वे ये देखें कि कोई भी विद्यार्थी बीच में अपनी पढ़ाई का अधूरा न छोड़े। विद्यालय में प्रवेश लेने वाला हर विद्यार्थी बारहवीं तक की पढ़ाई पूर्ण करे। शिक्षक इस जिम्मेदारी को अपने कर्तव्य के साथ जोडें कि जो बच्चा किसी भी वजह से अगर स्कूल से बाहर है तो उसे स्कूल के अंदर, स्कूल की परिधि में लेकर आएँ। विद्यालय में विद्यार्थी का आना इसलिए भी आवश्यक है कि यहाँ उसका समाजीकरण होता है। यहाँ के दस-बारह सालों में उसका जो शारीरिक व मानसिक विकास होता है वह उसके पूरे जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहीं से वह वे तमाम बातें सीखता है जिनसे वह इस समाज का जिम्मेदार नागरिक बनता है। इसलिए हर बच्चे को स्कूल तक लाना बेहद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक अध्यापक इसे अपना ध्येय मान कर चलें।

उन्होंने कहा कि हमें यह भी देखना होगा कि आँगनवाड़ी, स्वास्थ्य विभाग के रजिस्टर के अनुसार अगर छः वर्ष का कोई बच्चा स्कूल नहीं आ रहा है तो उसे किस प्रकार विद्यालय में लाया जाए। कुछ विद्यार्थी आठवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ देते हैं। इस बात को भी रोकना होगा। शिक्षक विद्यार्थी के एसआरएन नंबर

का दो तीन साल तक विश्लेषण करें कि वह सरकारी या निजी किसी स्थान पर अवश्य शिक्षा प्राप्त कर रहा है। अगर नहीं पढ़ रहा तो उसकी जानकारी एकत्रित कर उसे पुनः शिक्षा से जोड़ें। विद्यालयों में जीरो ड्रॉपआउट करने की दिशा में आगे बढ़ना होगा।

शिक्षकों के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम में इंद्रधनुष सभागार खचाखच भरा हुआ था। शिक्षकों को जब पुरस्कार दिए जा रहे थे, तो पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज रहा था। पुरस्कार पाकर अध्यापक काफी हर्ष व गर्व से भरे दिखाई दे रहे थे।

इस मौके पर कुछ पुरस्कार विजेताओं के साथ प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने बातचीत भी की। पंचकूला के राजकीय माध्यमिक विद्यालय चंडीकोटला की शिक्षिका सविता ने बताया कि इस पुरस्कार को पाकर वे बहुत गर्वित महसूस कर रही हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने अपने विद्यालय में नामांकन बढ़ाने के लिए विशेष प्रयत्न किए हैं। रेवाड़ी की शिक्षिका रेणु वर्मा ने बताया कि यह पुरस्कार उन्हें और भी अधिक उर्जा के साथ काम करने की प्रेरणा देगा। सोनीपत के शिक्षक सतीश कुमार ने बताया कि उन्होंने व्याकरण की कई किताबें लिखी हैं, जिनके माध्यम से हिंदी व्याकरण को सरलता से सीखा जा सकता है। सोनीपत के शिक्षक कुलदीप सिंह ने बताया कि वे शिक्षण को अपना धर्म मानते रहे हैं। इस पुरस्कार को पाकर उनका दायित्व और भी बढ़ गया है। रेवाड़ी के सत्यपाल सिंह ने बताया कि उन्होंने ईवीएस विषय से संबंधित कई पुस्तकें लिखीं है, जो छात्रों के लिए काफी लाभकारी साबित हुई हैं।

कार्यक्रम के अंत में मौलिक एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. अंशज सिंह ने धन्यवाद-प्रस्ताव रखा। डॉ.प्रदीप राठौर द्वारा कार्यक्रम का संचालन किया गया, जो बेहद प्रभावी था। इस अवसर पर पुलिस उपायुक्त श्री सुरेंद्र पाल सिंह, गेल की पूर्व निदेशक श्रीमती बंतो कटारिया और प्रदेशभर से आये शिक्षक उपस्थित थे।

प्रवक्ता, अंग्रेजी
रावमा विद्यालय, टिक्कर हिल्स
जिला- पंचकूला, हरियाणा

प्रवक्ता अशोक वशिष्ठ को राज्यपाल ने किया सम्मानित

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नलवा में हिंदी प्राध्यापक के पद पर कार्यरत अशोक वशिष्ठ को वर्ष 2020 के लिए स्टेट टीचर अवार्ड प्रदान किया गया है। उन्होंने इस पुरस्कार को अपने शिक्षकों, माता-पिता व छात्रों को समर्पित किया है। हिसार जिले के गाँव गंगन खेड़ी निवासी सत्यवान वशिष्ठ के दो पुत्र व एक पुत्री शिक्षा विभाग की सेवा में हैं और तीनों ने राज्य शिक्षक पुरस्कार प्राप्त किया है। बड़े भाई राजेश वशिष्ठ को 2014 में व बहन नीलम शर्मा को राजस्थान शिक्षा विभाग की ओर से 2019 में राज्य शिक्षक पुरस्कार मिला है।

भाषाई कौशलों को विकसित करने हेतु प्रवक्ता अशोक वशिष्ठ ने छात्रों को विविध प्रतियोगिताओं में भागीदारी करने हेतु प्रेरित किया है। पाँच बार खंड स्तरीय व दो बार राज्य स्तरीय बाल कवि सम्मेलनों का सफल आयोजन करवाने वाले प्राध्यापक अशोक वशिष्ठ हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा व विश्वभाषा बनाने के लिए प्रयासरत हैं। कानूनी साक्षरता, कला उत्सव, गीता जयंती, हिंदी पखवाड़ा व विभिन्न परियोजनाओं से संबंधित अनेक प्रतियोगिताओं में छात्रों ने इनकी प्रेरणा व प्रोत्साहन से भागीदारी कर विजय प्राप्त की है। गतिविधियों के श्रेष्ठ संचालन को देखते हुए इन्होंने खंड के नोडल अधिकारी की भूमिका का निर्वहन किया, वहीं जिला व राज्य स्तर पर अनेक कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं के संचालन में अपना सहयोग दिया। राज्य स्तर के प्रशिक्षित कुशल क्विज-मास्टर, प्रशिक्षक व मंच-संचालक प्रवक्ता अशोक वशिष्ठ एनएसएस व स्काउटिंग के माध्यम से छात्रों को सामाजिक गतिविधियों से जोड़कर व्यक्तित्व विकास व आदर्श समाज निर्माण में अपना योगदान दे रहे हैं। इनके विद्यालय के स्वयंसेवकों ने जिला और राज्य स्तरीय शिविरों में श्रेष्ठता हासिल की है। इन्होंने स्काउटिंग के अनेक राज्य व राष्ट्रीय प्रशिक्षणों में भागीदारी की, वहीं जिला संगठन आयुक्त कब हिसार का दायित्व सँभाल कर अनेक शिक्षकों को स्काउटिंग से जोड़ा। कक्षा तत्परता कार्यक्रम, क्विज क्लब, प्रश्न बैंक निर्माण, मॉड्यूल लेखन व अन्य शिक्षा विभाग की विभिन्न परियोजनाओं व प्रशिक्षणों में इन्होंने भागीदारी कर उनका लाभ छात्रों को दिया है।

क्या हैं राज्य शिक्षक पुरस्कार के चयन-मापदंड?

सुरेश राणा

एक शिक्षक के जीवन का सपना होता है कि उसे राज्य शिक्षक पुरस्कार मिले। राजभवन में उसका नाम पुकारा जाए। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उसके कार्यों, उपलब्धियों तथा नवाचार को राज्य स्तर पर पहचान मिले। माननीय राज्यपाल, मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री और शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों के बीच मंच पर चाँदी का चमचमाता मैडल उसके गले में पहनाया जाए और इस ऐतिहासिक क्षण के गवाह बनें उसके परिजन। शैक्षिक कार्यों की वजह से समाज में उसे विशिष्ट पहचान मिलती है तो उसे गर्व की अनुभूति होना स्वाभाविक है। कठिन परिश्रम के बलबूते पर मिला यह पुरस्कार शिक्षकों, सहकर्मियों तथा विद्यार्थियों के लिए नवीन प्रेरणा लेकर आता है।

आइए, इस लेख के माध्यम से हम जानते हैं किस तरह एक शिक्षक अपने सपनों की उड़ान भर सकता है?

हरियाणा में अनेक शिक्षक राज्य शिक्षक पुरस्कार पाने के योग्य हैं और हकदार भी हैं, परन्तु उन्हें इस बात का इल्म नहीं होता कि पुरस्कार के लिए किस तरह आवेदन करना है, कैसे तैयारी करनी है, क्या-क्या दस्तावेज तैयार करने हैं। बहुत से शिक्षक मार्गदर्शन के अभाव में तैयारी नहीं कर पाते। अनेक कर्मठ शिक्षक हैं, जो तल्लीनता और कठिन परिश्रम से शिक्षण कार्य करते हैं, उनके विद्यार्थी राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर अपने प्रदर्शन की पताका फहराते हैं, परन्तु वे यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त करने का अवसर गँवा बैठते हैं।

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा प्रतिवर्ष शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सरकारी शिक्षकों से राज्य पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। ये पुरस्कार शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों को प्रदान किए जाते हैं। इसके लिए शैक्षणिक दक्षता, विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रदर्शन, शिक्षण में नवाचार, शिक्षक की व्यक्तिगत उपलब्धियाँ, समुदाय के साथ सहभागिता तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं में विद्यार्थियों की उपलब्धियों आदि के आधार पर उत्कृष्ट शिक्षक का चयन किया जाता है।

शिक्षक पुरस्कार का उद्देश्य-

राज्य शिक्षक पुरस्कार का उद्देश्य है हरियाणा के बेहतरीन शिक्षकों के अद्वितीय योगदान का उत्सव मनाना तथा उन शिक्षकों का सम्मान करना जिन्होंने अपनी प्रतिबद्धता, लग्न, जज़्बे और परिश्रम से न केवल स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया है, बल्कि उचित मार्गदर्शन के बलबूते पर असंख्य विद्यार्थियों के जीवन को भी सँवारा है। इसके माध्यम से शिक्षकों की प्रतिष्ठा को बढ़ाना तथा मेधावी शिक्षकों के उत्कृष्ट कार्य को सार्वजनिक मान्यता देना है। यह पुरस्कार शिक्षकों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा भी पैदा करता है जिससे वे बेहतर करने हेतु प्रेरित होते हैं। यह प्रेरणा शिक्षा में सुधार के लिए संजीवनी का काम करती है। ये पुरस्कार शिक्षकों के सम्मान में हर साल शिक्षक दिवस यानी 5 सितंबर को प्रदान किए जाते हैं।

पुरस्कारों की संख्या-

इन पुरस्कारों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है, जिनमें सैकेंडरी वर्ग के अंतर्गत प्रधानाचार्य, हाई स्कूल हेडमास्टर, सभी विषयों के पीजीटी शिक्षक तथा एलिमेंट्री वर्ग में प्राथमिक शिक्षक, मुख्य-शिक्षक, सी एंड वी शिक्षक, सभी विषयों के टीजीटी तथा एलिमेंट्री स्कूल हेडमास्टर शामिल किये गए हैं। शिक्षा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष कुल 90 शिक्षक अवार्ड निर्धारित किए हैं। जिनमें 45 पुरुष शिक्षक तथा 45 शिक्षिकाएँ शामिल हैं। इन पुरस्कारों की संख्या पद और विषयानुसार अलग-अलग निर्धारित की गई है। जैसे प्रधानाचार्य, हिंदी प्रवक्ता, अंग्रेज़ी प्रवक्ता तथा गणित प्रवक्ता के लिए चार-चार पुरस्कार निर्धारित हैं, जिनमें दो-दो पुरुष तथा दो-दो महिला शिक्षक शामिल हैं। मुख्याध्यापक तथा अन्य विषयों के प्रवक्ताओं के लिए एक-एक पुरुष शिक्षक तथा एक-एक महिला शिक्षक को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इसी प्रकार एलिमेंट्री समूह में मौलिक स्कूल मुख्याध्यापक, टीजीटी सोशल साइंस/अंग्रेज़ी, गणित, विज्ञान, हिंदी, प्राथमिक मुख्य-शिक्षक के लिए चार-चार पुरस्कार निर्धारित हैं जिनमें दो-दो शिक्षक तथा दो-दो शिक्षिकाएँ शामिल हैं। अन्य

विषयों के शिक्षकों के लिए दो-दो पुरस्कार दिए जाते हैं जिनमें से एक पुरुष तथा एक महिला शिक्षक शामिल हैं। इसी प्रकार प्राथमिक शिक्षकों के लिए कुल 12 पुरस्कार निर्धारित किए गए हैं जिनमें आधे अर्थात 6 शिक्षिकाओं के लिए निर्धारित हैं।

कौन कर सकता है आवेदन-

राज्य शिक्षक पुरस्कार के लिए विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा में कार्यरत वे ही शिक्षक आवेदन कर सकते हैं, जिनका कक्षा-कक्ष शिक्षण अनुभव कम से कम पन्द्रह वर्ष का हो। मुख्याध्यापक और प्रधानाचार्य के लिए शिक्षण अनुभव 20 वर्ष निर्धारित किया गया है, जिसमें से कम से कम पाँच वर्ष का कार्यानुभव मुख्याध्यापक या प्रधानाचार्य के पद पर होना चाहिए। इंटीग्रेटेड इंक्लूसिव शिक्षा को प्रोमोट करने में लगे शिक्षकों को शिक्षण अनुभव में पाँच वर्ष की छूट दी गई है। शैक्षिक प्रशासनिक अधिकारी जैसे जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी, डाइट प्रधानाचार्य, उप जिला शिक्षा अधिकारी, खण्ड शिक्षा अधिकारी, एससीईआरटी, सर्व शिक्षा अभियान और निदेशालय में कार्यरत स्टाफ तथा सेवानिवृत्त शिक्षक इस पुरस्कार के लिए पात्र नहीं है। पुरस्कार के लिए वे ही शिक्षक आवेदन कर सकते हैं जिन्हें पिछले 10 वर्षों की एसीआर/एपीएआर (वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट) में ग्रेड प्लस-ए या ए प्राप्त हुआ है। शिक्षक का अंतिम पाँच वर्षों का दसवीं और बारहवीं कक्षा का बोर्ड परीक्षा परिणाम ऋणात्मक तथा नॉन बोर्ड कक्षाओं का अंतिम पाँच वर्ष का परीक्षा परिणाम 80 प्रतिशत से कम नहीं होना चाहिए। संस्थान के मुखिया अर्थात् प्रधानाचार्य या मुख्याध्यापक के विद्यालय का कक्षा दसवीं और बारहवीं के सामान्य परीक्षा परिणाम बोर्ड की तुलना में ऋणात्मक नहीं होने चाहिए। वे ही प्रतिभागी चयन के योग्य हैं जो निर्धारित मानदंड के अनुसार 100 अंकों में से कम से कम 60 अंक प्राप्त करते हैं।

कैसे करें आवेदन-

शिक्षा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष राज्य शिक्षक पुरस्कार के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। शिक्षक को पोर्टल पर स्वयं रजिस्ट्रेशन करना पड़ता है, जिसमें संबंधित शिक्षक की व्यक्तिगत सूचनाएँ शिक्षक का नाम, पिता का नाम, लिंग, जन्मतिथि, यूनिक आई डी, आधार संख्या, मेल एड्रेस, मोबाइल नम्बर, किस कैटेगरी के लिए आवेदन कर रहे हो, कुल कार्यानुभव तथा स्कूल की पूरी जानकारी आदि विवरण दिए जाने होते हैं। रजिस्ट्रेशन के बाद कार्यानुभव का प्रमाण-पत्र, वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट की समरी शीट तथा परीक्षा परिणाम पोर्टल पर अपलोड करने पड़ते हैं। अगले चरण में आवेदक को निर्धारित मापदंडों के अनुसार वांछित दस्तावेज दिए गए पोर्टल पर पीडीएफ फ़ाइल बनाकर टॉपिक के अनुसार अपलोड करने पड़ते हैं, जिनका साइज 3 एमबी से अधिक नहीं होना चाहिए। यदि फ़ाइल का साइज 3 एमबी से अधिक होता है तो उसे गूगल ड्राइव पर अपलोड किया

जा सकता है। गूगल ड्राइव पर फ़ाइल अपलोड करने एवं उसका एक्सेस करने की अनुमति की पूरी जानकारी दिए गए लिंक पर उपलब्ध होती है।

चयन के मानदंड-

राज्य शिक्षक पुरस्कार प्रदान करने में एकरूपता एवं पारदर्शिता लाने हेतु मुख्यालय स्तर पर ही राज्य स्तरीय कमेटियाँ गठित की गई हैं, जो निर्धारित मानदंडों के अनुसार दस्तावेजों की गहन जाँच करके योग्य शिक्षकों का पारदर्शिता से चयन करती हैं।

आइए बात करते हैं इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के चयन-मानदंड क्या हैं?

1. परीक्षा परिणाम-

राज्य शिक्षक पुरस्कार हेतु अंतिम पाँच वर्ष का बोर्ड परीक्षा परिणाम अहम भूमिका अदा करता है। यदि पिछले पाँच वर्षों में शिक्षक द्वारा पढ़ाया गया विद्यार्थी बोर्ड की परीक्षा में राज्य स्तर पर टॉप टेन में जगह बनाता है तो इसके लिए शिक्षक को पाँच अंक दिए जाएँगे। शिक्षक को पिछले पाँच वर्षों में पढ़ाए गए उन छात्रों की सूची तैयार करनी होगी जिन्होंने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं। जिसके लिए एक अंक प्रति छात्र निर्धारित किया गया है। जिन विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं उनकी भी सूची तैयार करनी होगी जिसके लिए प्रति छात्र आधा अंक निर्धारित किया गया है। बोर्ड टॉप टेन सूची में स्थान या 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र या 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए अधिकतम 5 अंक प्रदान किए जाएँगे। यदि दसवीं या बारहवीं के कुल विद्यार्थियों में से 60 प्रतिशत छात्र 60 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करते हैं तो इस हेतु अलग से पाँच अंक निर्धारित किए गए हैं।

बोर्ड परीक्षा परिणाम के लिए 7.5 अंक निर्धारित किए गए हैं। यदि आपका दसवीं या बारहवीं का परीक्षा परिणाम 90 प्रतिशत से अधिक है तो आपको 1.5 अंक प्रतिवर्ष मिलेंगे। यदि परीक्षा परिणाम 80 से 90 प्रतिशत के बीच में रहता है तब 0.75 अंक प्रति वर्ष मिलेंगे। यदि बोर्ड परीक्षा परिणाम 70 से 80 प्रतिशत के बीच रहता है तो 0.50 अंक प्रतिवर्ष मिलेंगे। बोर्ड परीक्षा परिणाम में वृद्धि के लिए भी अधिकतम 5 अंक निर्धारित किए गए हैं। यदि बोर्ड परीक्षा परिणाम में 10 प्रतिशत से अधिक वृद्धि होती है तो आवेदक को एक अंक प्रतिवर्ष मिलेगा।

नॉन बोर्ड परीक्षा परिणाम कक्षा नौवीं या ग्यारहवीं के परीक्षा परिणाम के लिए कुल 2.5 अंक निर्धारित किये गए हैं। यदि शिक्षक का परीक्षा परिणाम 90 प्रतिशत से अधिक है तो आधा अंक प्रतिवर्ष मिलेगा और यदि परीक्षा परिणाम 80 से 90 प्रतिशत है तो 0.25 अंक प्रतिवर्ष मिलेंगे।

इस प्रकार पीजीटी शिक्षक के लिए बोर्ड तथा नॉन बोर्ड परीक्षा परिणाम के लिए कुल 25 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रधानाचार्य एवं मुख्याध्यापक के लिए विद्यालय बोर्ड परीक्षा परिणाम के लिए कुल 30 अंक हैं, जिनमें दसवीं और बारहवीं के परीक्षा परिणाम, पढ़ाई गई बोर्ड कक्षा का परिणाम, विद्यार्थियों का प्रदर्शन तथा बोर्ड परीक्षा परिणाम में वृद्धि शामिल है। बोर्ड तथा नॉन बोर्ड परीक्षा परिणाम एलिमेंट्री समूह के शिक्षकों पर लागू नहीं होता। इसके स्थान पर उनके सीसीई रिकॉर्ड, छात्र संख्या में वृद्धि, पाठ योजना तथा अध्यापक डायरी के अंकों की गणना की जाती है।

2. सीसीई रिकॉर्ड-

यदि आप एलिमेंट्री स्कूल हेडमास्टर, टीजीटी, सी

एंड वी, प्राथमिक शिक्षक या मुख्य-शिक्षक हैं तो आपको पिछले पाँच वर्ष का सीसीई रिकॉर्ड तैयार करना होगा जिसके लिए दो अंक प्रतिवर्ष निर्धारित किए गए हैं अर्थात् यदि आपका पाँच वर्षों का सीसीई रिकॉर्ड पूरा है तो इसके लिए आपको दस अंक प्रदान किए जाएँगे। सीसीई रिकॉर्ड में विभाग द्वारा आयोजित मासिक परीक्षाएँ शामिल हैं, जिनका रिकॉर्ड शिक्षक द्वारा रजिस्टर में दर्ज करना होगा। शिक्षक का सीसीई रिकॉर्ड पूरा है इसके पुख्ता सबूत के तौर पर मुखिया द्वारा जारी प्रमाण-पत्र भी अपलोड करना चाहिए।

3. छात्र संख्या में वृद्धि और ठहराव-

विद्यालय में छात्र संख्या में वृद्धि और ठहराव के लिए कुल दस अंक निर्धारित किए गए हैं। छात्र संख्या में वृद्धि के अंकों की गणना पीजीटी आवेदकों को छोड़कर अन्य सभी शिक्षकों पर लागू होती है। यदि विद्यालय की छात्र संख्या में पिछले पाँच वर्षों में छात्र संख्या में वृद्धि होती है तो आपको दो अंक प्रतिवर्ष मिलेंगे यदि छात्र संख्या में पिछले सत्र से कोई बदलाव नहीं होता तो आपको एक अंक मिलेगा। छात्र संख्या में वृद्धि के लिए अधिकतम पाँच अंक निर्धारित किए गए हैं। शिक्षक द्वारा विद्यालय से बाहर तथा ड्रॉप-आउट बच्चों का सर्वे करके उसका रिकॉर्ड तैयार करना है तथा उन विद्यार्थियों का विद्यालय में नामांकन भी करवाना है। इसके लिए अधिकतम पाँच अंक निर्धारित किए गए हैं। छात्र संख्या में वृद्धि प्रमाण-पत्र, सर्वे रिपोर्ट, ड्रॉप आउट तथा नॉन स्टार्टर का विद्यालय में प्रवेश के दस्तावेज पीडीएफ फ़ाइल बनाकर अपलोड करने होंगे।

4. पाठ योजना और दैनिक अध्यापक डायरी-

पाठ योजना और अध्यापक डायरी के लिए पाँच अंक निर्धारित किए गए हैं। शिक्षक को दस पाठ योजना तैयार करके कक्षा-कक्ष में उनके अनुसार बच्चों को पढ़ाना है। शिक्षक को अंतिम वर्ष की दैनिक अध्यापक डायरी का भी रिकॉर्ड रखना पड़ता है। जिसमें दैनिक शिक्षण कार्य, मासिक परीक्षा मूल्यांकन, ग्रीष्मकालीन कार्य, परियोजना कार्य, पीटीएम बैठकों का विवरण आदि शामिल हैं। इन सभी पाठ योजनाओं और अध्यापक डायरी पर शिक्षक और विद्यालय मुखिया के हस्ताक्षर होने चाहिए। डायरी लेखन और पाठ योजना का प्रमाण-पत्र मुखिया द्वारा जारी किया गया हो। पाठ योजना, डायरी और मुखिया द्वारा जारी प्रमाण-पत्र की पीडीएफ फाइल पोर्टल पर अपलोड करनी होगी। यह बिंदु केवल एलिमेंट्री वर्ग के शिक्षकों पर लागू होता है।

5. शिक्षण में नवाचार-

राज्य शिक्षक पुरस्कार आवेदक के लिए शिक्षण में नवाचार एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है जो सीधा कक्षा-कक्ष शिक्षण से जुड़ा है। इसके अंतर्गत शिक्षक द्वारा सूचना प्रोद्यौगिकी, आनंददायक गतिविधि, उचित पेडागोजी, सहायक शिक्षण सामग्री तथा ई-कंटेंट का निर्माण एवं उनका शिक्षण में प्रयोग आते हैं। विद्यार्थियों के शिक्षण में उपयोगी इन पाँच बिंदुओं के अंतर्गत शिक्षक द्वारा कम से कम दो-दो नवाचार किए जाने हैं जिसकी वीडियो/ऑडियो, सोशल मीडिया पर उनका उपयोग, यू ट्यूब चैनल, फोटोग्राफ, समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार प्रूफ के तौर पर प्रस्तुत करने चाहिए। नवाचार का प्रमाण-पत्र कम से कम संस्थान मुखिया द्वारा जारी किया गया हो। इन पाँच विषयों के लिए दो-दो अंक अर्थात् दस अंक निर्धारित किए हैं। शिक्षा में नवाचार प्रधानाचार्य और मुख्याध्यापक को छोड़कर सभी शिक्षकों पर लागू होता है।

6. वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट-

शिक्षक की अंतिम पाँच वर्ष की वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट (एसीआर/एपीएआर) के लिए दस अंक निर्धारित किये गए हैं। यदि आपकी एसीआर/एपीएआर में प्लस-ए ग्रेड है तो उसके लिए दो अंक प्रति वर्ष तथा एसीआर/एपीएआर में ग्रेड ए है तो एक अंक प्रतिवर्ष प्रदान किया जाएगा। यह बिंदु सभी आवेदकों के लिए लागू होता है।

5. उच्च योग्यता-

शिक्षक द्वारा यदि सेवाकाल के दौरान उच्च योग्यता सम्बंधित विषय में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से अर्जित की है तो इसके लिए अधिकतम पाँच अंक निर्धारित किए गए हैं। संबंधित विषय मे पीएच-डी के लिए 5 अंक, एमफिल के लिए 3.5 अंक और एमएड के लिए दो अंक प्रदान किए जाएँगे। उच्च योग्यता से संबंधित प्रमाण-पत्र की पीडीएफ फ़ाइल पोर्टल पर अपलोड करनी होगी।

6. समुदाय का सहयोग-

विद्यालय में संसाधन जुटाने के लिए समुदाय का सहयोग लेना नितांत जरूरी है। इसके लिए पाँच अंक निर्धारित किए गए हैं। यदि आप तीन लाख से अधिक की राशि का संसाधन विद्यालय में जुटाते हैं तो आपको 5 अंक, दो लाख से अधिक तीन लाख तक के लिए 4 अंक, एक लाख से अधिक व दो लाख तक 3 अंक, पचास हजार से एक लाख तक 2 अंक मिलेंगे। इसके लिए आवश्यक दस्तावेज संलग्न करने जरूरी हैं। जिसमें

मुझे शिक्षा विभाग द्वारा 2018 में राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया जो मेरे लिए बड़े गर्व की बात है। शिक्षक विद्यार्थी जीवन के वास्तविक शिल्पकार होते हैं जो न सिर्फ उसके जीवन को सही आकार देते हैं बल्कि जीने का सही सलीका भी सिखाते हैं। उन्हें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं तथा सफल जीवन की नींव भी शिक्षक के हाथों द्वारा रखी जाती है। शिक्षक के लिए सभी छात्र समान होते हैं और वह सभी का कल्याण चाहता है। शिक्षक विद्यार्थी को सही-गलत व अच्छे-बुरे की पहचान करवाते हुए उनमें अंतर्निहित शक्तियों को विकसित करने में अहम भूमिका अदा करता है। वह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए उनका मार्ग प्रशस्त करता है। किताबी ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों व संस्कार रूपी शिक्षा के माध्यम से एक शिक्षक ही विद्यार्थियों में अच्छे चरित्र का निर्माण करता है। शिक्षक को राज्य शिक्षक पुरस्कार मिलना बड़े गर्व की बात है जो उसकी मेहनत का प्रतिफल है।

भूप सिंह
राज्य शिक्षक पुरस्कृत-2018 प्राथमिक शिक्षक
राप्रापा, उदित पाथापुर, खंड बवानी खेड़ा, भिवानी, हरियाणा

विद्यालय मुखिया का प्रमाण पत्र, दानदाता द्वारा दिया गया प्रशंसा-पत्र, खर्च विवरण, बिलों की प्रति, फोटोग्राफ तथा अन्य पुख्ता सबूत हो सकते हैं।

7. विभिन्न प्रतियोगिताओं में उपलब्धियाँ-

जैसा कि हम जानते हैं कि विद्यालय शिक्षा विभाग विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यार्थी कल्चरल फेस्ट, लीगल लिटरेसी, क्विज़, कला उत्सव, बाल रंग, साइंस फेयर, गीता जयंती आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। खण्ड स्तर से लेकर, जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले प्रतिभागियों की उपलब्धि की गणना प्रत्येक इवेंट प्रति वर्ष के आधार पर की जाती है। इन उपलब्धियों में अंतिम पाँच वर्ष की उपलब्धियों की गणना की जाती है। जिसके लिए दस अंक निर्धारित किए गए हैं। जिसमें विद्यालय सौन्दर्यकरण प्रतियोगिता को भी शामिल किया गया है। इसके लिए आपको विद्यार्थियों के प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र लगाने होंगे। इसके साथ ही विद्यालय मुखिया द्वारा जारी किया गया प्रमाण-पत्र भी संलग्न करना होगा। जिसमें वर्णित हो कि उक्त विद्यार्थियों ने आपके मार्गदर्शन में भाग लिया है तथा उनकी तैयारी आपके द्वारा करवाई गई है।

8.अन्य सहायक गतिविधियाँ-

शिक्षक अन्य गतिविधियों जैसे स्पोर्ट्स, एडवेंचर कैम्प, पर्वतारोहण, स्काउट एंड गाइड, एनसीसी, एनएसएस , रैडक्रॉस, इको क्लब, सेल्फ डिफेंस, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत अभियान, एक भारत-श्रेष्ठ भारत, करियर गाइडेंस मेला आदि गतिविधियों में राज्य, राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भाग लेते हैं तो इसके लिए 10 अंक निर्धारित किए गए हैं। अंकों की गणना प्रत्येक गतिविधि और वर्षानुसार की जाएगी। राज्य स्तर पर भाग लेने के लिए एक अंक, राष्ट्रीय स्तर के लिए डेढ़ अंक तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर के लिए दो अंक प्रदान किए जाएँगे। इसके लिए शिक्षक को विभाग द्वारा मिले प्रमाण पत्र अपलोड करने होंगे।

9. आवश्यक गतिविधियों में प्रतिभागिता-

केंद्र और राज्य सरकार द्वारा अनेक योजनाओं और गतिविधियों का संचालन किया जाता है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि उनके धरातल पर कार्यान्वयन हेतु वे महती भूमिका अदा करें, जिनमें अध्यापक डायरी लेखन, गृह कार्य/ कक्षा कक्ष कार्य मूल्यांकन, मॉर्निंग असेंबली/नैतिक शिक्षा/योगा, बोर्ड कक्षा इंचार्ज, समय सारणी निर्माण, मिड-डे मील प्रभारी, लर्निंग एन्हांसमेंट प्रोग्राम (एलईपी), परियोजना आधारित शिक्षण, रक्तदान, जिला स्तर पर स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस मनाने में योगदान, मासिक मूल्यांकन रिकॉर्ड, पीटीएम का आयोजन, दाखिला खारिज रजिस्टर का प्रभार, अतिरिक्त कक्षाएँ लेना, स्कूल परीक्षा इंचार्ज, कक्षा तत्परता कार्यक्रम, आनन्ददायक गतिविधियों का आयोजन, एसएमसी मीटिंग में प्रतिभागिता, सुपर-100 में विद्यार्थियों का चयन, नकल रोको अभियान में योगदान शामिल हैं।

इसमें प्रत्येक गतिविधि के लिए प्रतिवर्ष आधा अंक निर्धारित किया गया है। अतः प्रतिवर्ष हमें कम से कम छह गतिविधियों का चुनाव करना होगा। इसके लिए हमें संस्थान प्रभारी का प्रमाण-पत्र और सहायक दस्तावेज भी लगाने होंगे। इस विषय के सबसे अधिक 15 अंक निर्धारित किए गए हैं। इसमें भी अंतिम पाँच वर्षों की गतिविधियाँ शामिल की जानी हैं। इसके लिए फोटोग्राफ भी अपलोड करने चाहिए।

10.प्रकाशन-

सभी शिक्षकों के लिए सेवाकाल के दौरान प्रकाशन के अंतर्गत 5 अंक निर्धारित किए गए हैं। यदि आपकी कोई पुस्तक प्रकाशित हुई है तो उसके लिए पाँच अंक, अन्तरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशन के ढाई अंक, अन्तरराष्ट्रीय कॉफ्रेंस में भाग लेने के दो अंक, नेशनल जर्नल प्रकाशन के डेढ़ अंक, सरकारी पत्रिका में लेख प्रकाशन के एक अंक तथा समाचार पत्र में लेख प्रकाशित होने पर आधा अंक मिलेगा। प्रकाशित लेखों के अलग-अलग अंक दिए जाते हैं। पुस्तक या लेख आईएसएसएन या आईएसबीएन नम्बर सहित प्रकाशित होने चाहिए।

11.सेवाकालीन प्रशिक्षण-

सेवाकालीन प्रशिक्षण शिक्षक के लिए अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा विभाग अनेक सेवाकालीन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। यदि शिक्षक ने तीन या तीन से अधिक सेवाकालीन प्रशिक्षण शिविरों में भाग लिया है तो इसके लिए पाँच अंक दो सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए 3 अंक तथा एक प्रशिक्षण के लिए 2 अंक प्रदान किए जाते हैं।

प्रोत्साहन स्वरूप मिलता क्या है-

राज्य शिक्षक पुरस्कृत शिक्षक को हरियाणा सरकार द्वारा वर्ष 2021 से पहले दो वर्ष की अतिरिक्त सेवाकाल में वृद्धि तथा दो अतिरिक्त वेतन वृद्धि महँगाई भत्ते सहित पूरे सेवाकाल के लिए प्रदान की जाती थी। इसके साथ-साथ प्रोत्साहन स्वरूप 21,000 रुपये नकद, चाँदी का मेडल, प्रमाण-पत्र तथा एक शाल उपहार स्वरूप दी जाती थी।

वर्ष 2021 में राज्य शिक्षक पुरस्कार नियमावली में बदलाव किया गया। अब पुरस्कार राशि में बढ़ोतरी की गई है। अब 21,000 की बजाय एक लाख रुपए नकद प्रदान किए जाते हैं। इसके साथ-साथ चाँदी का मैडल, प्रमाण-पत्र, दो एडवांस वेतन वृद्धि महँगाई भत्ते सहित पूरे सेवाकाल के लिए प्रदान की जाती है। अब पुरस्कृत शिक्षक को दो वर्ष का अतिरिक्त सेवाकाल प्रदान नहीं किया जाता।

यदि शिक्षक योजना बनाकर निर्धारित मानदंड के अनुसार तैयारी करें तो पुरस्कार को प्राप्त करने की डगर ज्यादा कठिन नहीं हैं। बस उन्हें अंतिम पाँच वर्षों का लेखा-जोखा तैयार करना होगा। शिक्षक शिक्षण कार्य के अतिरिक्त जिन अन्य गतिविधियों में भाग लेता है उसे उनके प्रमाण पत्र, उपस्थिति रिपोर्ट, प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र आदि आवश्यक दस्तावेज सम्भाल कर रखने चाहिए। शिक्षण के अतिरिक्त विद्यालय में जो अन्य कार्यभार मिले हैं, उनका विवरण आदेश पुस्तिका में दर्ज हो तो बेहतर होगा। जब भी शिक्षक किसी प्रशिक्षण शिविर में या विद्यार्थियों को प्रतियोगिता हेतु लेकर जाते हैं तो उसका विवरण भी आदेश पुस्तिका में दर्ज होना चाहिए। शिक्षण कार्य, नवाचार व अन्य गतिविधियों के फोटोग्राफ, वीडियो समाचार-पत्र की कटिंग भी प्रूफ के तौर पर संकलित करनी चाहिए।

नोटः पुरस्कार की नियमावली में समय-समय पर बदलाव होते रहते हैं। उपरोक्त जानकारी आपकी सुविधा के लिए है। अगर आप इस पुरस्कार के लिए आवेदन करना चाहते हैं, तो विभाग की नवीनतम नियमावली को अवश्य देखें।

राज्य शिक्षक पुरस्कृत-2019
हिंदी प्राध्यापक
रावमा विद्यालय मुर्तजापुर,
खंड- पिहोवा, जिला-कुरुक्षेत्र, हरियाणा

राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित होना मेरे लिए बड़े ही गर्व का विषय है। पुरस्कार समाज में सम्मान, गरिमा और प्रतिष्ठा प्रदान करते हैं तो अनेक जिम्मेदरियों का भी अहसास करवाते हैं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षक को अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक निर्वहन करना चाहिए।

जैसा कि हम जानते हैं आज के बच्चे भविष्य के कर्णधार हैं। उनके चहुँमुखी विकास की धुरी शिक्षक के इर्द-गिर्द ही घूमती है। शिक्षक विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्ति में सहायता करते हैं तथा उन्हें आत्मविश्वास से ओत-प्रोत करके उचित राह चुनने में उनका मार्गदर्शन करते हैं। अतः राष्ट्र निर्माता शिक्षक को समाज में उचित सम्मान मिलना चाहिए। राज्य शिक्षक पुरस्कार हरियाणा सरकार की सराहनीय पहल है जिससे शिक्षक को समाज में एक विशिष्ट पहचान मिलती है।

सुमन मलिक
गणित अध्यापिका
राउवि, आहुलाना, खंड कथूरा, जिला सोनीपत, हरियाणा

विद्यार्थियों ने योग-दिवस पर बारालाचा दर्रे पर बनाया कीर्तिमान

सुनील कुमार

योग, जोकि सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः के भाव के साथ अपने अंदर एक विशिष्ट जीवन शैली, गंभीर दार्शनिक चिन्तन और संपूर्ण चिकित्सा विज्ञान के गुणों को समाहित किये हुए है, की गणना सदियों से ही भारतीय संस्कृति के परिचायक और पहचान के रूप में होती आई है। पौराणिक काल से ही योग का अस्तित्व विद्यमान रहा है। ऐसा कहा जाता है कि यह भगवान शिव ही थे जिन्होंने इस कला को जन्म दिया। शिव, जिन्हें सनातन धर्म में आदि अवधूत योगी के रूप में जाना जाता है, दुनिया के सभी योग गुरुओं के लिए प्रेरणास्रोत रहे हैं। सामान्यतः यह समझा जाता है कि उत्तर भारत में सिंधु-सरस्वती घाटी सभ्यता में 5000 वर्ष पूर्व इस योग की अवधारणा और अभ्यास अस्तित्व में आया था। ऋग्वेद में पहली बार इस अवधि का उल्लेख हुआ है। महान योगियों ने योग साधना एवं तपोबल के माध्यम से अपने अनुभवों का तर्कपूर्ण आधार विश्व के सम्मुख प्रस्तुत किया है। उन्होंने व्यावहारिक और वैज्ञानिक रूप से योग के रूप में एक ऐसी प्रभावशाली चिकित्सा पद्धति का सूत्रपात किया है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है। पतंजलि ने अपनी पुस्तक योग सूत्र में योग के विभिन्न पहलुओं को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया है। उन्होंने मानव जाति के सर्वांगीण विकास के लिए योग करने के आठ नियम बताए हैं, जिन्हें अष्टांग योग के नाम से जाना जाता है।

आज योग केवल ऋषियों, संतों और मुनियों तक ही सीमित नहीं है, अपितु यह हमारे दैनिक जीवन में शामिल हो चुका है। आज योग का चतुर्दिक प्रसार हो रहा है। पाश्चात्य संस्कृति भी अतिभोगवाद से उबकर भारतीय परंपराओं एवं योग को आत्मसात कर रही है। पिछले कुछ वर्षों से विशेषकर 2015 के बाद तो योग विश्वव्यापी जागरूकता उत्पन्न करने के साथ-साथ अपनी स्वीकार्यता और लोकप्रियता को भी बढ़ा रहा है जिसका सारा श्रेय माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी को जाता है। योग की कला को एक उत्सव या त्योहार के रूप में स्थापित करने का विचार प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ही सर्वप्रथम प्रस्तावित किया था। इस पहल के माध्यम से भारतीय प्रधान मंत्री हमारे पूर्वजों द्वारा दिए गए इस अनोखे उपहार को प्रकाश में लाना चाहते थे। उन्होंने सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) में अपने भाषण के दौरान इस सुझाव का प्रस्ताव दिया था। अपने संयुक्त राष्ट्र के संबोधन में उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि योग दिवस 21 जून को मनाया जाना चाहिए क्योंकि यह वर्ष का सबसे लंबा दिन है। यूएनजीए के सदस्यों ने मोदी जी द्वारा दिए गए प्रस्ताव पर विचार-

विमर्श किया और 21 जून 2015 का दिन को प्रथम अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। तब से प्रति वर्ष 21 जून का दिन अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इस वर्ष 21 जून को आठवाँ अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पूरे देश में बड़े धूमधाम से मनाया गया। स्वतन्त्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने पर 'अमृत महोत्सव' के अंतर्गत पूरे देश में एक साथ 75,000 स्थानों पर योग करके एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की जिससे पूरा राष्ट्र ही योगमय हो गया था। लेकिन योग की इस उपलबधि की गौरव गाथा का यह अध्याय तब तक अधूरा रहेगा जब तक इसमें हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग के विद्यार्थियों द्वारा स्थापित कीर्तिमान का स्वर्णिम पन्ना नहीं जुड़ जाता।

अन्तरराष्ट्रीय योग-दिवस के दिन हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के दल ने हिमाचल प्रदेश राज्य के दुर्गम बारालाचा दर्रे के शिखर जिसकी ऊँचाई 4850 मीटर है, पर सामूहिक योग एवं सूर्य-नमस्कार कर इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज कराया है। विद्यार्थियों के लिए बरालाचा दर्रे पर योगासन करना इतना आसान भी नहीं था क्योंकि एक ओर जहाँ अत्यधिक ऊँचाई पर ऑक्सीजन का स्तर कम होने से साँस लेने में कठिनाई का अनुभव हो रहा था, वहीं दूसरी ओर बर्फबारी और बर्फ़ीली तेज हवाओं के कारण ठंड भी लग रही थी। इसके अतिरिक्त शिखर पर समतल जगह के अभाव में पैरों के संतुलन में भी बाधा आ रही थी। इतनी विषम एवं विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए दल ने योग कला का जो अनुपम उदाहरण वहाँ प्रस्तुत किया वो वास्तव में प्रशंसनीय था। अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों के इस दल में 35 छात्राएँ, 18 छात्र, 13 दिव्यांग (दृष्टि बाधित, श्रवण बाधित एवं वाणी बाधित) विद्यार्थियों एवं अध्यापकों समेत कुल 68 प्रतिभागी शामिल थे। यूनम पर्वत शिखर पर पताका फहराने हेतु गये इस दल को दिनांक 14 जून को हरियाणा निवास, चंडीगढ़ से माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल एवं शिक्षा मंत्री श्री कँवरपाल द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया था। इस दल के साथ माऊंट एवरेस्ट विजेता प्रशिक्षकों की अनुभवी टीम को भी भेज गया था। इस दल को 5,230 मीटर की ऊँचाई पर स्थित एडवांस बेस कैंप पर योग करना था। कड़ी मेहनत के बाद जब छात्रों का दल इस कैंप पर पहुँचा तो ऑक्सीजन की कमी और भारी बर्फबारी के चलते कई छात्रों और शिक्षकों की तबियत खराब हो गई, जिसके चलते उन्हें वहाँ से वापस लौटना पड़ा, लेकिन 40 छात्रों और अध्यापकों ने वहाँ रुक कर 21 जून को योग और प्राणायाम किया। हालांकि योग की चुनौती को तो दल ने पूरा कर लिया, लेकिन लगातार मौसम खराब होने के चलते यूनम पीक पर जाने का फैसला रद्द करना पड़ा। मनाली पहुँचने पर दल का उत्साहवर्धन करने के लिए शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री महावीर सिंह, अतिरिक्त निदेशक श्री विवेक कालिया एवं सहायक निदेशक श्री नन्दकिशोर फ्लैग इन कार्यक्रम में पहुँचे, जहाँ श्री महावीर सिंह ने बच्चों और शिक्षकों के हौसले की प्रशंसा की तथा उन्हें प्रमाण-पत्र वितरित किए। उन्होंने कहा कि इस बार भले ही खराब मौसम के चलते दल यूनम शिखर पर पर्वतारोहण नहीं कर सका, लेकिन दल ने कठिन एवं विषम परिस्थितियों में एडवांस बेस कैम्प (5,230 मीटर) और बरालाचा दर्रे (4,850 मीटर) पर योग करके इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में नाम दर्ज करवाने का जो कीर्तिमान स्थापित किया है वो शिक्षा विभाग के लिए गर्व की बात है।

हिंदी प्राध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
इस्माईलाबाद, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

प्रेरणा बना ढाणी गोपाल का राजकीय विद्यालय

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

इसमें कोई संदेह नहीं कि आज से दस-पंद्रह वर्ष पहले सरकारी विद्यालयों की स्थिति इतनी बढ़िया नहीं थी जितनी कि अब है। अब अधिकतर विद्यालय आकर्षण का केंद्र बनते जा रहे हैं। एक तो सरकार विद्यालय के नवीनीकरण, नई इमारतों तथा अन्य सुविधाओं के लिए खूब धन दे रही है। विद्यालयों में कई तरह की लैब, पुस्तकालय, ड्राइंग रूम, कंप्यूटर रूम बनाए जा रहे हैं। हालांकि अभी भी बहुत सी सुविधाएँ मिलनी बाकी हैं, फिर भी विद्यालयों को सुंदर बनाया जा रहा है। दूसरा, जब से विद्यालय सौंदर्यकरण प्रतियोगिताएँ आरंभ हुईं तब से इसके बेहतर परिणाम आए हैं। विद्यालय मुखिया का ध्यान विद्यालय विकास की ओर गया है।

अगर विद्यालय की इमारत मजबूत, साफ-सुथरी हो, प्रवेशद्वार आकर्षक, चारदीवारी नई हो, स्टेज बढ़िया हो, प्रांगण साफ-सुथरा, मन को लुभाने वाले पार्क तथा सजावटी, फूलदार व छायादार बहुत से पेड़ हों तो विद्यार्थियों का भी विद्यालय में आने का मन करता है, शिक्षकों का पढ़ाने का मन करता है। विद्यालय में आने वाले अभिभावक, अधिकारी व अन्य लोग भी विद्यालय की, शिक्षकों व मुखिया की प्रशंसा करते हैं और जो मुखिया व स्टाफ विद्यालय को सुंदर बनाने में अपना योगदान देते हैं, निःसंदेह वो बच्चों के सर्वांगीण विकास में भी अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। जो विद्यालय देखने में सुंदर होगा, वहाँ पढ़ाई भी अच्छी होगी। ये पूरी संभावना होती है। ऊर्जावान मुखिया तथा मेहनती शिक्षक जहाँ होते हैं वह विद्यालय भी सुंदर होगा तथा विद्यार्थी भी प्रतिभाशाली होंगे। वैसे तो आज बहुत से विद्यालय सुंदर हैं, किंतु विद्यालय मुखिया की लगन, मेहनत व कर्मठता के कारण कुछ विद्यालय खास आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। इनमें से एक विद्यालय है फतेहाबाद ज़िले का राजकीय उच्च विद्यालय ढाणी गोपाल।

एक वर्ष कुछ माह पूर्व तक ये विद्यालय अपने किसी तारणहार का इंतजार कर रहा था। जून 2021 में मोची चौबारा से पदोन्नत व बदली होकर ऊर्जावान, मेहनती, जुनूनी, कर्मठ व ईमानदार मुख्याध्यापक उग्रसेन सुथार इस विद्यालय में आए। उन्होंने कार्य ग्रहण किया तथा देखा कि विद्यालय की तो बड़ी दयनीय स्थिति है। अधिकतर कमरे टूटे पड़े थे। दो-तीन कमरे जो सही थे, उनमें विद्यालय का रद्दी सामान (मेज, कुर्सी, बेंच आदि) ठूँस रखा था। बच्चों के लिए कमरे नहीं थे। नव नियुक्त मुख्याध्यापक उग्रसेन ने सबसे पहले गाँव वालों की मीटिंग बुलाई। उन्होंने कहा कि एक बार आप अपने पैसों से बच्चों के बैठने के लिए बड़ा शैड बनवा लो, बाद में हम पैसे दे देंगे। उग्रसेन ने एक बार बच्चों के बैठने की व्यवस्था के लिए ढाई लाख रुपए की लागत से अपने पैसों से शैड बनवा दिया तथा उसके नीचे बैठने की अस्थाई व्यवस्था कर दी ताकि बच्चों की पढ़ाई सुचारु रूप से चल सके। उसके उपरांत उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी को कमरों के निर्माण के लिए पत्र लिखा। जिला शिक्षा अधिकारी दयानंद सिहाग ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए तीन कमरों की ग्रांट जारी करवाई। तीन

कमरों के निर्माण के साथ-साथ मुख्याध्यापक ने एक बड़ा कमरा तथा एक चौकीदार रूम अपने पैसों से बनवा दिए।

इसके साथ-साथ शिक्षा विभाग की ओर से एक बास्केटबॉल का ग्राउंड भी बनवाया ताकि खिलाड़ी विद्यार्थी अभ्यास कर सकें। साथ ही साइकलों हेतु शैड भी बनवाया। मिड-डे मील में बच्चों के बैठकर खाने की व्यवस्था के लिए भी एक शैड शिक्षा विभाग की ओर से बनवाया गया। पीने के पानी की व्यवस्था तो और भी आवश्यक होती है। विद्यालय में पानी की व्यवस्था खराब थी। कई बार तो पानी खत्म ही हो जाता था। मुख्याध्यापक ने इस व्यवस्था को प्राथमिकता देते हुए विद्यालय में पानी संग्रह हेतु जमीन में पानी का होद बनवाया तथा छत पर सीमेंट की (पानी की) टंकी बनवाई। परमाणु संयंत्र, गोरखपुर की मदद से दो वाटर कूलर लगवा दिए गए। अभी तो बहुत कुछ करना बाकी था। समग्र शिक्षा द्वारा भेजे गए 1,00,000 रुपयों से विद्यालय इमारत पर पेंट करवाया, दीवारों पर नक्शे बनवाए, स्लोगन लिखवाए तथा सुंदर-सुंदर पेंटिंग बनवाई गई। ऊर्जा भरे, प्रेरणा देने वाले महापुरुषों के फोटो भी दीवारों पर बनवाए गए। इतना ही नहीं, पहले स्कूल का एक ही द्वार था। दूसरे द्वार का निर्माण करवाया गया। गर्मी में विद्यार्थी आराम से पढ़ सकें इसलिए गाँव वालों के सहयोग से 25 पंखे लगवाए गए।

गाँव के कुछ दानी, सहयोगी लोगों तथा स्टाफ के सहयोग से विद्यालय में सौर-ऊर्जा की चार प्लेट तथा दो बैटरियाँ लगवाई गईं। इस पर एक लाख की राशि खर्च हुई। स्कूल सौंदर्य व सुविधा के लिए सभी सड़कें पक्की करवाईं तथा गाँव व स्टाफ के सहयोग से विद्यालय में सजावटी, महँगे पौधे लगवाए तथा बहुत से छायादार, फलदार व फूलदार पौधे लगवा कर उनके संरक्षण की व्यवस्था की गई। ये सब कुछ ऐसे ही नहीं हुआ। इस सबके लिए मुख्याध्यापक उग्रसेन ने दिन-रात एक कर दिए। वो अधिकारियों से मिले, कई जगह चिट्ठियाँ लिखीं, बार-बार गाँव वालों के साथ मीटिंग की, दानी व्यक्तियों की सूची तैयार कर उनसे बार-बार मिले, अन्य कई विभागों

से सहयोग माँगा, बहुत-सा खर्च जेब से भी करना पड़ा। कमरे बनवाते समय सुबह से शाम तक अपना समय विद्यालय को दिया। कुछ स्टाफ सदस्यों का सहयोग भी बराबर मिलता रहा। इतने कम समय में इनकी कठोर मेहनत व जुनून का ही परिणाम था कि विद्यालय सौंदर्य करण प्रतियोगिता में जिला स्तर पर इनका विद्यालय प्रथम स्थान पर रहा। पुरस्कार से प्राप्त राशि से इन्होंने स्टेज सहित प्रार्थना ग्राउंड का शैड लगवा दिया। विद्यालय में मिस्त्री बुलाकर डेढ़-सौ गमले सीमेंट, कंक्रीट से बनवा दिए।

यही नहीं, जब विद्यालय का सुधार हुआ तो शिक्षकों का बच्चों की ओर भी विशेष ध्यान गया। अब तक जिन विद्यार्थियों को बैठने की, पानी की, कमरों की सुविधाएँ नहीं थीं, उन्हीं बच्चों की प्रतिभा निखर कर सामने आने लगी। पढ़ाई में, खेलों में, सांस्कृतिक गतिविधियों में, प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने लगे। एनएमएमएस में छात्रवृत्तियाँ प्राप्त कीं, जिसकी तैयारी मौलिक मुख्याध्यापक प्रदीप बंसल ने करवाई। सुपर हंड्रेड की तैयारी जीव विज्ञान प्रवक्ता मुकेश ने करवाई तथा 10 बच्चों का चुनाव हुआ। शिक्षक रोजर चौधरी ने नवोदय विद्यालय की तैयारी करवाई तो कुल 6 सीटों में से 3 विद्यार्थियों का चुनाव अकेले इस विद्यालय से हुआ। दो विद्यार्थियों का चुनाव सैनिक स्कूल में हुआ जिसकी तैयारी शिक्षक रमेश ने करवाई थी। खेलों में भी इस विद्यालय के विद्यार्थी शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर बहुत बेहतर प्रदर्शन के बाद विद्यालय के 5 विद्यार्थियों का चुनाव कुश्ती में विदेश जाने के लिए हुआ है, जो शीघ्र ही विदेश जाएँगे। यही नहीं, मुख्याध्यापक उग्रसेन तथा मौलिक मुख्याध्यापक प्रदीप बंसल की देखरेख व मार्गदर्शन में विद्यालय के बच्चे सांस्कृतिक गतिविधियों में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का श्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं। कला उत्सव, कल्चरल फेस्ट, बाल भवन, वन विभाग, लीगल लिटरेसी के कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं में शानदार परिणामों से विद्यालय का नाम रोशन हो रहा है। जिला व राज्य स्तर पर बहुत बार प्रथम, द्वितीय या तृतीय स्थान हासिल किया है।

ये सब देखते हुए कहा जा सकता है कि इस विद्यालय में विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल होगा। मुख्य अध्यापक का मानना है कि अभिभावक हमारे भरोसे बच्चों को स्कूल भेजते हैं। हम शिक्षक हैं, इसलिए शिक्षक का दायित्व है कि वो विद्यालय विकास तथा विद्यार्थियों का सही मार्गदर्शन करें।

उग्रसेन शालीन, मेहनती व जुनूनी व्यक्तित्व के धनी हैं। यही कारण है कि वो अपने स्टाफ को सक्रिय रखते हैं तथा अभिभावकों का स्वागत करते हैं। प्रकृति प्रेमी होने के नाते विद्यालय को पेड़-पौधों से सुंदर हरा-भरा बनाया हुआ है। फूलों से सजाना इन्हें अच्छा लगता है। सचमुच अगर हर विद्यालय में ऐसा मुख्याध्यापक हो तो शिक्षा-जगत् में कमाल का काम हो सकता है। वैसे हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग के पास ऐसे मेहनती, कर्मठ शिक्षक बहुत हैं, किंतु अभी आवश्यकता है कि ऐसे व्यक्तित्वों की संख्या बढ़े। मुख्याध्यापक उग्रसेन और उनका स्टाफ बधाई के पात्र हैं।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही, फतेहाबाद, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

जानकारी राष्ट्रगान व राष्ट्रगीत की

1. राष्ट्रगान जन गण मन की गायन-अवधि 52 सेकेंड की है।
2. गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर द्वारा रचित इस राष्ट्रगान को 27 दिसम्बर 1911 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में सर्वप्रथम गाया गया था।
3. संविधान ने 24 जनवरी, 1950 को इसे राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया था।
4. राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् बंकिमचन्द्र चटर्जी ने लिखा है।
5. इसको भी राष्ट्रगीत के रूप में संविधान सभा ने 24 जनवरी, 1950 को स्वीकारा था।
6. राष्ट्रगीत की गायन अवधि 65 सेकेंड की है।
7. इस गीत के केवल प्रथम पद को ही राष्ट्रगीत के रूप में मान्यता प्राप्त है।

विनय मोहन खारवन
गणित प्राध्यापक
राकवमा विद्यालय, जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

पहेलियाँ

1 कार्तिक मावस का त्योहार
उजियाले का दे उपहार
सायं घर - घर दीपक जलते
फुलझड़ी - अनार हैं चलते

2 दीवाली में आदर पाते
जलकर तम को दूर भगाते
रखें सँजोकर बाती - तेल
सबसे कहते - रखना मेल

3 श्री धन्वंतरि जन्म - जयंती
राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस है
नई वस्तुएँ आज करें क्रय
कार्तिक की कृष्णा तेरस है

4. कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी वाली
आती है छोटी दीवाली
कृष्ण ने नरकासुर था मारा
पर्व कौन - सा होता न्यारा?

5 कार्तिक शुक्ल प्रथमा तिथि आती
गायों की पूजा की जाती
कृष्ण ने वर्षा से था बचाया
बोलो कौन - सा पर्व कहाया?

6 कार्तिक शुक्ल द्वितीया आती
बहिन, भ्रात के तिलक लगाती
भ्राता से पाती उपहार
कौन - सा बतलाओ त्योहार?

7 पर्व प्रकाश का और न दूजा
की जाती भगवती की पूजा
दीवाली की रात सुहाती
धन की देवी कौन कहाती?

8 बुद्धि देवता हैं कहलाते
सदा प्रथम हैं पूजे जाते
पार्वती माँ, पिता महेश
मूषक किसका वाहन विशेष?

उत्तर - 1 दीपावली 2 दीपक 3 धनतेरस 4 नरक चतुर्दशी 5 गोवर्धन पूजा 6 भैया दूज 7 श्री लक्ष्मी 8 श्री गणेश

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ- 226022

ब्लैकबॉक्स का रंग ब्लैक नहीं होता

जब भी विमान हादसा होता है तो ब्लैकबॉक्स का ज़िक्र जरूर होता है। आखिर क्यों है इतना महत्त्वपूर्ण। विमान में ये कहाँ होता है तथा ये किस रंग का होता है? आइये जानते हैं।

दरअसल, ब्लैक बॉक्स एक फ्लाइट रिकॉर्डर की तरह काम करता है। यह विमान की पल-पल की जानकारी रखता है। यह किसी भी विमान में उड़ान के दौरान होने वाली सभी गतिविधियों को बारीकी से रिकॉर्ड करने वाला उपकरण है। यह वायुयान के पिछले हिस्से में फिट होता है। बताना चाहेंगे कि विमान में लगा ब्लैक बॉक्स क्यों प्लेन क्रैश के बावजूद सही सलामत बच जाता है। दरअसल, यह टाइटेनियम का बना होता है जो काफी मजबूत धातु मानी जाती है। ब्लैक बॉक्स को टाइटेनियम के एक डिब्बे में बंद करके रखा जाता है। इसी कारण अगर ब्लैक बॉक्स काफी ऊँचाई से गिरता है, तो भी उसे नुकसान नहीं पहुँचता।

साल 1953-54 में हवाई हादसों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए विमान बनाने वाली कंपनियों ने विमान में ऐसे उपकरण लगाने की बात की जो हादसों के सही कारण को बता सके ताकि भविष्य में हादसों से सीख कर बचा जा सके। इसके लिए ब्लैक बॉक्स का आविष्कार किया गया। ब्लैक बॉक्स का रंग नारंगी होता है, लेकिन बाद में इसका नाम ब्लैक बॉक्स पड़ गया। दरअसल, ब्लैक बॉक्स की भीतरी दीवार को काला रखा जाता था शायद इसीलिए इसे ब्लैक बॉक्स कहते हैं। इन डिवाइस में जो डेटा डिजिटली सेव होता है, वह नष्ट न हो इसलिए इन्हें शॉक-प्रूफ बनाया जाता है. साथ ही यह एक घंटे तक 1,110 डिग्री सेंटीग्रेड के तापमान को और कम से कम दस घंटे तक ढाई सौ डिग्री सेंटीग्रेट के तापमान को सहने की क्षमता रखते हैं.

विनय मोहन खारवन, गणित प्राध्यापक
राकवमा विद्यालय
जगाधरी, हरियाणा

सबसे बड़ी सेवा

एक समय की बात है। गुरु गोविंद सिंह के दर्शन के लिए उनका एक वैद्य शिष्य आनंदपुर साहिब गया हुआ था। वैद्य जब लौटने लगे तो गुरु जी ने उनसे कहा- जाओ और जरूरतमंद लोगों की सेवा करो। गाँव लौटने के बाद वह रोगियों की सेवा में जुट गए। वैद्य ने अब रोगियों की सेवा को अपना धर्म मान लिया। तन-मन से रोगियों की सेवा में लग गए। वैद्य की सेवा की चर्चा पूरे शहर में फैल गई।

एक बार गुरु गोविंद सिंह स्वयं उनके घर पर आए। वैद्य की खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन गुरु जी ने कहा कि उन्हें आगे जाना है, इसलिए कुछ देर ही ठहरेंगे। गुरु जी वैद्य का हालचाल पूछ रहे थे कि इतने में एक व्यक्ति भागता हुआ आया और बोला- वैद्य जी, मेरी पत्नी की तबीयत बहुत खराब है। जल्दी चलिए, नहीं तो बहुत देर हो जाएगी।

वैद्य असमंजस में पड़ गए। पहली बार गुरु जी उनके घर आए हैं, उन्हें छोड़कर कैसे जाएँ। दूसरी तरफ बीमार की हालत बहुत खराब है। एक तरफ गुरु जी, दूसरी तरफ बीमार का जीवन। वैद्य ने तुरंत निर्णय किया और कर्म को प्रधानता दी। गुरु के चरण स्पर्श कर वह झटपट इलाज करने के लिए निकल पड़े।

लगभग दो-ढाई घंटे की देखभाल के बाद मरीज की हालत में सुधार हुआ। रोगी के यहाँ से वैद्य निकले और तेजी से घर की तरफ चल दिए। वैद्य ने सोचा कि गुरु जी के पास समय नहीं था, अब तक तो वह चले गए होंगे। फिर भी भागते-भागते अपने घर पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने जो कुछ देखा, उससे हैरान रह गए। गुरु जी गए नहीं थे, उनकी प्रतीक्षा में बैठे हुए थे। वैद्य उनके चरणों पर गिर पड़े। गुरु गोविंद सिंह ने उन्हें गले से लगा लिया और कहा, तुम मेरे सच्चे शिष्य हो। सबसे बड़ी सेवा जरूरतमंदों की मदद करना है। (अखबार से)

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राप्रापा सराय अलावर्दी गुरुग्राम, हरियाणा

कोल्ड-ड्रिंक को ना ना

रंगबिरंगे कोल्ड-ड्रिंक को करना है ना ना।
पिएँ न शादी - पार्टी में, निज संकल्प निभाना।

कोल्ड-ड्रिंक पीने में मीठा
लगता ठंडा - ठंडा,
शौक स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद,
अधिक बुरा है फंडा,

सेवन करके, अधिक मोटापा
नहीं कदापि बढ़ाना।

रोग प्रतिरोधक क्षमता घटती
तन होता बीमार,
हाथ लगाया यदि इसको तो
लेगा बना शिकार,

कोमल मन - स्मरणशक्ति को,
अपने आप बचाना।

नींबू, शिकंजी, बेल का शर्बत
उत्तम मैंगो शेक,
अमिया पना, चुकंदर रस में
तत्त्व भरे हैं नेक,

लस्सी, छाछ, नारियल पानी
पोषकता का खजाना।

सूप-सब्जियों के क्या कहने
गन्ने का रस भाता,
चने के सत्तू को जो पीता
लाभ और सुख पाता,

पेय प्राकृतिक लेना अच्छा
करना नहीं बहाना।
रंगबिरंगे कोल्ड-ड्रिंक को करना है ना ना।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ-226022

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय विज्ञान अध्यापक साथियो व प्यारे विद्यार्थियो, प्रस्तुत हैं कुछ और नई विज्ञान गतिविधियाँ-

1. पुस्तकें जो अलग-अलग न हो पायीं-

इस गतिविधि को करने के लिए कक्षा-6 के दो विद्यार्थियों ने विज्ञान की दो पुस्तकों से एक गतिविधि की। उन्होंने दोनों पुस्तकों को समानांतर रखकर एक-एक करके (वन बाई वन) पन्नों को एक के ऊपर एक पलटते हुए व्यवस्थित किया। इसी पैटर्न पर दोनों पुस्तकों को लॉक कर लिया। अब दोनों पुस्तकों को दो विद्यार्थियों द्वारा विपरीत दिशा में खींचने पर वे पुस्तकें अलग-अलग नहीं हुईं। इस घटना को देखकर विद्यार्थी बहुत हैरानी में थे। अब वह जानना चाहते थे ऐसा किस लिए हुआ? ऐसा घर्षण बल के कारण होता है। जब एक पेज को दूसरे पेज पर रखते हैं तो उनके बीच में हवा खारिज होती है और अंदर कम दबाव का क्षेत्र बनता है। लगातार पेजों को एक के ऊपर एक रखने से परस्पर पन्नों के बीच घर्षण बल इतना ज्यादा बढ़ जाता है कि खींचने पर भी वे पुस्तकें अलग नहीं होतीं। कक्षा के सभी विद्यार्थियों ने इस गतिविधि को करके यह सीखा कि घर्षण और वायु दबाव में इतना अधिक बल होता है।

2.दृष्टि भ्रम की स्थिति को जाना-

कक्षा 6 के विद्यार्थी ने मुझसे पूछा कि सर दृष्टिभ्रम क्या होता है? मैंने उनको दृष्टिभ्रम की दो गतिविधियाँ करवाकर दृष्टिभ्रम बारे सिखाया, जिसमें हमने तीन स्ट्रॉ और कागज के तीन 2 इंच चौड़े अर्ध वक्राकार टुकड़ों की सहायता ली। पहले तीन एक समान लंबाई वाले स्ट्रॉ लिए। फोटो के अनुसार कोण बनाती हुई चार रेखाओं के बीच चिपकाया। तो देखने पर दोनों स्ट्रॉ समान लंबाई के नही लगे। तीसरे स्ट्रॉ से नापने पर वो समान लंबाई के थे। ऐसा दृष्टिभ्रम कोण बनाती रेखाओं के कारण हुआ जो दो समान्तर लगाए गए स्ट्रॉ की लंबाई कम ज्यादा होने से उत्पन्न हुआ। जो स्ट्रॉ बिंदु 'ओ' के निकट था, वही स्ट्रॉ दूसरे वाले से बड़ा होने का दृष्टि-भ्रम उत्पन्न कर रहा था। बड़े कोण की भुजाओं को छूता स्ट्रॉ बड़ा व छोटे कोण की भुजाओं को छूता स्ट्रॉ छोटा लगता है जबकि दोनों समान लम्बाई के थे।

दूसरी गतिविधि में हमने कागज के तीन समान 2 इंच चौड़े अर्ध वक्राकार टुकड़े काटे। विद्यार्थियों ने दो टुकड़ों को समान परिधि की तरफ से दीवार पर चिपकाया तो देखा कि उन्हें एक टुकड़ा छोटा लग रहा है। तीसरे समान टुकड़े से नाप कर दिखाने पर पता चला कि वे तीनों बराबर हैं। ऐसा इसलिए हुआ कि अर्धचंद्राकार टुकड़ों में बाह्य चाप की माप आंतरिक चाप की माप से अधिक है। जब-जब छोटी आंतरिक चाप बाह्य चाप के समक्ष आएगी तो वह छोटी दिखेगी, जबकि वे सब एक समान होती हैं। विद्यार्थियों को इन दोनों गतिविधियों से समझ में आया कि दृष्टिभ्रम क्या होता है और इन दोनों गतिविधियों में दृष्टिभ्रम सापेक्ष तुलना में उत्पन्न होता है।

3.एक कागज में कितनी ताकत?

मेज के किनारे पर एक 12 इंच वाले मेटल स्केल को आधे से कुछ ज्यादा मेज के ऊपर और बाकी को हवा में रखते हैं। हवा वाले भाग के ऊपर एक डिब्बी को गिराने से वह मेटेलिक स्केल नीचे गिर जाता है। यदि हम उसी स्केल के ऊपर मेज वाले भाग पर एक ए-4 साइज का कागज रख दें, उसके बाद उसी डिब्बी को स्केल के स्वतंत्र सिरे पर गिराएँ तो वह स्केल नीचे नहीं गिरता।

ऐसा इसलिए होता है कि स्केल के ऊपर रखे कागज के ऊपर लंबवत् लगने वाला वायुमंडलीय दबाव का क्षेत्रफल स्केल के सापेक्ष बढ़ जाता है। अब मेटल स्केल के उसी भाग पर डिब्बी के गिराने से स्केल नीचे नहीं गिरता। क्या एक कागज की शीट में इतना अधिक भार होता है कि डिब्बी गिराने से उत्पन्न बल से भी अधिक रहता है?

4.जल का वैद्युत अपघटन, नवाचारी विधि-

दो ग्रेफाइट पेंसिल को दोनों तरफ से छील लेते हैं। एक काँच के पात्र में पानी भर लेते हैं। एक गत्ते के

टुकड़े में दो सुराख करके (दोनों पेंसिल हैं) इसमें से निकालते हैं। पेंसिलों का गत्ते से नीचे का हिस्सा का पानी में डाल देते हैं और ऊपर के हिस्सों पर बैटरी के दोनों टर्मिनल लगाने पर हम देखते हैं कि पेंसिल के पानी के अंदर वाले सिरों पर इलेक्ट्रोलाइसिस प्रक्रिया में उत्पन्न गैसों के बुलबुले बनते दिखाई देते हैं। विद्युत पानी को इलेक्ट्रोलाइट की उपस्थिति में ऑक्सीजन व हाइड्रोजन में विघटित कर देती है। इलेक्ट्रोलाइसिस के इस नवाचारी प्रयोग को स्मार्ट-बोर्ड पर लाइव भी दिखाया गया।

5.स्वच्छता एवं पौधारोपण का महत्त्व-

इस विषय पर विशेषज्ञ व्याख्यान के लिए प्रदेश के नवाचारी, प्रगतिशील किसान व महामहिम राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित आविष्कारक धर्मवीर काम्बोज दामला, यमुनानगर को आमंत्रित किया गया। धर्मवीर जी ने विद्यार्थियों को बताया कि आप हमेशा अपने दिमाग में आने वाले नवाचारी विचारों (आइडिया) को कागज़ पर लिख कर अपने अध्यापक को दिया करो, जिन्हें

हम 'हनी बी नेटवर्क' व 'नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन' को देंगे। ये संस्थाएँ इन आइडियाज का अध्ययन करके उन्हें आविष्कार रूप में लाने का प्रयास करेंगे। उन्होंने स्वच्छता एवं पौधारोपण का महत्त्व बताते हुए इस पर अमल करने की शपथ दिलायी। उन्होंने खुद डिज़ाइन की गई सड़क पर झाड़ू लगाने की मशीन बारे भी बताया।

6.स्मार्ट क्लास रूम: विज्ञान सीखने का नया आनन्द।

आजकल विद्यार्थी कक्षा में नए लगे स्मार्ट बोर्ड पर विज्ञान को विभिन्न गतिविधियों से सीखते हैं। वे क्विज खेलते हैं, प्रोजेक्ट बनाना, असाइनमेंट्स, बुक रीडिंग, पीडीएफ प्रश्नावली, उड़ान एक्टिविटीज, एस्ट्रोनॉमी आभासी आकाश दर्शन व वर्चुअल प्रयोगशाला की गतिविधियों का भी आनन्द लेते हैं। तो फिर प्यारे विद्यार्थियो! मिलते हैं अगली कड़ी में नई विज्ञान गतिविधियों के साथ...

मौलिक मुख्यापक व विज्ञान संचारक
राउवि शादीपुर, खंड-जगाधरी,
जिला-यमुनानगर,हरियाणा

जीवट व्यक्तित्व के धनी हैं अध्यापक- अजय श्योराण

कहते हैं कि मनुष्य का प्रारब्ध जन्म से ही उसके साथ होता है। इन्हीं संचित संस्कारों को पाकर बालक किसी संस्कारी परिवार में जन्म लेता है। इसीलिए कहा गया है कि होनहार बिरवान के होत चिकने पात। ऐसे ही संस्कारों एवं मानवीय गुणों से युक्त अध्यापक अजय श्योराण को ये सभी संस्कार उनके पिता श्री दरिया सिंह जी से मिले हैं, जो स्वयं भी एक अध्यापक रहे हैं।

लगभग पिछले 34 वर्षों से अध्यापक के रूप में कार्य कर रहे अजय श्योराण वर्तमान में भिवानी जिले के राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला कौंट में मुख्य शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। इनके विद्यालय में कुल 236 छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। इनके कुशल विद्यालय प्रबंधन के कारण प्रति वर्ष छात्राओं की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रहती है। विद्यालय समय के बाद ये छात्राओं की अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन भी करते हैं। जिनमें वे विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करना, पेंटिंग करना, संगीत, नृत्य आदि का प्रशिक्षण देते हैं।

एक कर्मठ अध्यापक होने के साथ-साथ ये रैडक्रॉस काउंसलर भी हैं। सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर कार्य करना, रक्त दान शिविरों का संचालन करना, किसी भी आपात स्थिति में मरीजों को सहायता पहुँचाना आदि कार्यों में इनकी प्राथमिकता रहती है।

अजय श्योराण कहते हैं कि वर्ष 2003 में हुई एक बस दुर्घटना ने उनकी जिंदगी के मायने ही बदल दिए, इस बस में ये स्वयं भी सफ़र कर रहे थे । सामने से आ रहे एक ट्रक से भिड़ंत के बाद बस के परखच्चे उड़ गए और बस में हाहाकार मच गया। जिधर देखो उधर खून बिखरा पड़ा था। एक पल को उन्हें भी समझ में नहीं आया कि अचानक से यह सब क्या हो गया। परन्तु अगले ही पल उन्होंने स्वयं को सँभाला और आनन-फानन में कुछ लोगों को हस्पताल पहुँचाया जिससे उन लोगों का जीवन बचाने में कामयाब रहे।

इस घटना के बाद इन्होंने इस दिशा में कुछ नया करने की ठानी। इन्होंने जिला रैडक्रॉस, भिवानी से सम्पर्क किया और इसके स्थायी सदस्य बन गए। इसके बाद इस सोसायटी के विभिन्न शिविरों में भाग लेना और लोगों को प्राथमिक उपचार के लिए जागृत करना इनके जीवन का लक्ष्य बन गया। अब तक वे कुल 62,102 कैडेट्स को जीवन रक्षक टिप्स देकर प्रशिक्षित कर चुके हैं।

यही नहीं, वे अब तक कुल 32 बार रक्तदान करने के अलावा इतने ही रक्तदान शिविर आयोजित करके लोगों के जीवन को बचाने का संदेश दे रहे हैं। इसीलिए इनके द्वारा किए जा रहे मानव कल्याण के कार्यों के लिए हरियाणा के महामहिम राज्यपाल महोदय द्वारा अब तक पाँच बार इन्हें काउंसलर अवार्ड मेरिट सर्टिफिकेट से नवाज़ा जा चुका है। अजय श्योराण को पिछले दो वर्षों से लगातार यह सम्मान मिलना गर्व की बात है। अजय श्योराण भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के जूनियर विंग में भी पिछले कई वर्षों से भिवानी जिले के कॉर्डिनेटर के रूप में भी कार्य कर रहे हैं। ये प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों के स्काउट्स एवं गाइड्स के प्रशिक्षण शिविर आयोजित करवाने में अपना योगदान देते रहते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप प्राथमिक विद्यालयों में भी कब एवं बुलबुल के रूप में स्काउटिंग की नई पौध तैयार हो रही है।

कोरोना महामारी की विषम परिस्थितियों में भी अजय श्योराण एक योद्धा की तरह डटे रहे और घर-घर जाकर छात्राओं को न केवल पढ़ाया, अपितु जरूरतमंद परिवारों की आर्थिक सहायता भी की। जिसके लिए विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा उन्हें कई मंचों पर सम्मानित भी किया गया। ऐसे विलक्षण प्रतिभा एवं जीवट व्यक्तित्व के धनी अजय श्योराण सम्पूर्ण मानवता तथा अध्यापक वर्ग के लिए एक मिसाल हैं।

हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी उनका सम्पूर्ण जीवन शिक्षा एवं समाजोपयोगी कार्यों को समर्पित रहेगा।

पवन कुमार स्वामी
जेबीटी अध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय
चुंगी नंबर 7, लोहारू, ज़िला-भिवानी, हरियाणा

डिजिटल बोर्ड के माध्यम से पढ़ते हैं 'शिक्षा सारथी'

आजकल पहले समय की अपेक्षा पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने का प्रचलन कुछ कम हो गया है। यदि कुछ वर्ष पूर्व की बात करें तो पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने का अच्छा खासा प्रचलन था। सबको मासिक पत्रिकाओं की प्रतीक्षा रहा करती थी और समाचार पत्र तो रोज ही पढ़ा जाता था। हमारे विद्यालय के विद्यार्थी हर माह शिक्षा निदेशालय, पंचकूला द्वारा प्रकाशित 'शिक्षा सारथी' पत्रिका की प्रतीक्षा करते हैं। अब तो राजकीय उच्च विद्यालय शादीपुर के विद्यार्थी डिजिटल बोर्ड के माध्यम इस पत्रिका को पढ़ते हैं। पत्रिका के प्रकाशन की सूचना मिलते ही निदेशालय की वेबसाइट से पत्रिका को पीडीएफ रूप में डाउनलोड करके डिजिटल बोर्ड के माध्यम से सभी विद्यार्थियों को उसका अवलोकन करवाया जाता है और उन्हें शिक्षा विभाग में चल रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। उसके पश्चात इस पीडीएफ प्रति को विद्यार्थियों के व्हाट्सएप ग्रुप में शेयर कर दिया जाता है, जिससे विद्यार्थी इस पत्रिका को घर पर भी पढ़ लेते हैं। डिजिटल बोर्ड पर पत्रिका को पढ़ाने का विचार मुझे इस प्रकार आया कि 'खेल-खेल में विज्ञान' लेख का प्रकाशन शृंखला के रूप में विगत तीन वर्षों से चल रहा है। इसमें प्रकाशित गतिविधियाँ इन विद्यार्थियों के द्वारा ही की जाती हैं, इसलिए विद्यार्थियों को अपनी गतिविधियों के प्रकाशन को देखने पढ़ने की तीव्र इच्छा होती है।

'शिक्षा सारथी' के अलावा विद्यार्थियों को विज्ञान प्रसार, इंडिया साइंस, डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी आदि अन्य वेबसाइट पर ले जाकर उनका भी अवलोकन कराया जाता है।

इससे विद्यार्थियों को समय समय पर विज्ञान में होने वाली प्रतियोगिताओं और गतिविधियों का पता चलता है। विद्यार्थी इन वैबसाइटों का नियमित दौरा करते हैं और अपनी आवश्यकता के अनुरूप जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। सभी विद्यार्थी शिक्षा विभाग का आभार व्यक्त करते हैं कि कक्षाओं में लगाये गए डिजिटल बोर्ड के प्रयोग से उनके ज्ञान में वृद्धि हो रही हैऔर उन्हें डिजिटल तकनीक के प्रयोग का भी अभ्यास हो रहा है।

दर्शन लाल बवेजा
मौलिक मुख्याध्यापक व विज्ञान संचारक
राउवि शादीपुर, जिला-यमुनानगर, हरियाणा

2022

अक्टूबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

2 अक्टूबर- महात्मा गांधी जयंती
5 अक्टूबर- दशहरा
7 अक्टूबर- विश्व मुस्कान दिवस
9 अक्तूबर- महर्षि वाल्मीकि जयंती
11 अक्टूबर- अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस
13 अक्तूबर - करवा चौथ
16 अक्टूबर- विश्व खाद्य दिवस
24 अक्टूबर- दीवाली
25 अक्टूबर- विश्वकर्मा दिवस
26 अक्टूबर- गोवर्धन पूजा
27 अक्टूबर- भैया दूज
30 अक्टूबर- छठ पूजा
31 अक्टूबर- विश्व बचत दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Cultural Fest : Honing the Talents of School Students

Babita Yadav

Co-curricular activities are important for the holistic development of school children. Due emphasis has been laid on this aspect of school education by all educational policies and reforms as these activities help in the all-round development of students. Moreover, such activities impart knowledge to the students about folk art and culture of their respective states which is the essence of unity in diversity of the nation.

The Department of School Education, Haryana provides ample opportunities to school students to show their talents by organising cultural fest every year. This fest is organised at four levels, viz. school level, block level, district level and state level in two groups — one for students of classes 5 to 8 and another for students of classes 9 to 12 across all the government schools in the state to bring out the best from school students in various cultural fields like folk raagni, folk dance and play. It serves as the best platform to bring the best in students and hone the talent of government school students of Haryana. In the Cultural Fest, cash prizes are given to first three position holders along with a consolation prize in every event — folk raagni, solo folk dance, folk group dance and play at block, district and state level competitions organised under the aegis of School Education Department, Haryana.

Such competitions serve as a medium to spread awareness about the rich and vivid culture and tradition of Haryana as students get to know of the folk costumes, musical instruments, dialect and various folk singing and dancing styles when they prepare for such competitions. It is also a way to revive our age-old art forms in the modern society which is not so much acquainted with it.

Encouraging the students to take part in cultural fest is the most effective way to foster personality related skills. This helps the students to build confidence and understand their culture in a better way. When students perform on stage and become successful in cultural competitions, they gather more confidence and also face their academic challenges in a better way. Such activities refresh the minds of students and increase their concentration levels as well. In addition to this, students learn to work in groups, develop team spirit and take success and failure as a part of life in a positive way.

Such fests are a tool to revive our age-old folk traditions and culture, create a diverse social network in school children and develop a positive sense of identity.

PGT English
GSSS Rewari, Haryana

Rainbows makes me happy when I am low

Rainbows makes me happy when I am low,
they have seven colours in a row.

Rainbows are cheerful for me,
it makes things nice as I see..

Rainbows are shiny and bright,
but we don't see them in the night..

Rainbow look like they are new,
but they are made just for you..

Sun helps rainbow glow,
but the clouds make them go..

Myra Chawla
8 Year
Shiv Nadar School
Sector 168, Noida

Teacher Recognition in holistic progress card

An Unconventional Approach for School Based Assessment

Rajender Sharma

No one can deny the role of a teacher in making the future of a child. It was not possible for us to have personalities like Sachin Tendulkar and Dr. Kalam if teachers like Ramakant Achrekhar and Muthu Iyer were not there. It is impossible to forget the contribution of teachers in building the future of a nation. Great teachers with high sense of hard work and persistence are the foundation of the career and interests of their students. Teacher can make or break the sense of dreaming of a child. An active educator can open the ways of achievements for learners while a passive one can equally diminish their dreams and desires. Teachers are the backbone of society and their efforts must be recognized. Since, educators are responsible for the holistic development of learners that refers to all aspects of the learner including body, mind and spirit. As mentioned in NEP 2020 Holistic Progress Card (HPC) will be a link between home and school that should contain academic as well non-academic spheres. These are meant to assess a child completely in physical, intellectual, emotional and social domains. There is a great impact of teacher pedagogy on student performance as teachers are the pivot of the teaching-learning process. Being a teacher trainer, I have observed that potential teachers are the basis of student's strong interest and high-performance level of a student in

a particular subject. Teachers directly influence students and motivate them to achieve their goals and do better in their future. In my view, the Holistic Progress Card (HPC) that is to be provided to students at the end of each academic year should contain the name of the subjects' teachers as well. This practice should be applicable to students of Primary, Middle, Secondary and Senior Secondary level. The data base of the HPC should be maintained and the dash board of the same that is accessible to the students as well as teachers on their Management Information System (MIS) portal. This database must consist of students' academic record with the name of the particular teacher who has contributed in their subject knowledge, understanding and academic achievement. On the same lines, details of the academic performance of the student taught by the teachers with their departmental unique identification number in their entire teaching span should be recorded and linked with their MIS portal that may be accessible to teachers as well as community. The vision and mission of the current idea is to emphasize the role of teachers in subject intellectual development and performance level of student that will ultimately help to provide quality teaching at Government Schools.

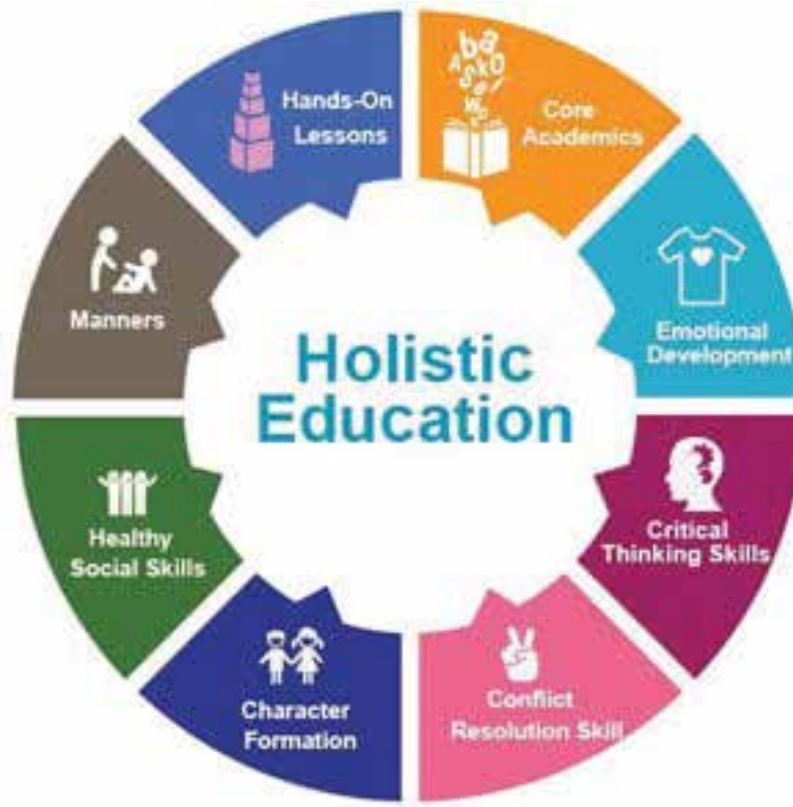

Future Outlook

The HPC with name of the corresponding subject teacher will definitely help teachers to focus on the problem areas related with the subject concerned and individual student attention to get better results. Teachers will imply novel teaching strategies in their teaching methods as the subject result will be teacher oriented. A database of student teachers will be available. A database of teacher score card with details and academic performance of students in their entire teaching experience will be available. Students will come to know about the role of the teacher in their achievement and academic performance level of students will be enhanced. This practice will surely increase teacher efficacy required for their best performance. Teachers will get motivated with result of good performing students. Teacher's achievement score on yearly basis will also be available. Good performing students with high academic achievements at the school level and excellence in society in different spheres like sports, politics, administration, science, medicine, mathematics, research will be directly obliged to their teachers that will be a reward for preserving and energetic educators. Environment of healthy competition within the teachers will be there and goal of NEP 2020 for quality education will be achieved. It will become the criteria of annual Performance Appraisal Report (APAR) in terms of measured outcomes that will give the sense of satisfaction to the teachers who are making efforts to enhance the level of education.

Recognizing teachers in HPC will correlate the capacity of subject teacher with student performance level that will stress the need of teacher-training in a particular subject area. It will increase the accountability of teachers for the success of their students.

Assistant Professor, Mathematics
District Institute of Education and Training (DIET)
Mattersham, Hisar, Haryana

Role of Green Chemistry in Environment Management

"We cannot solve problems by using the same kind of thinking we used when we created them"-Albert Einstein

In the present scenario, India has set up milestones in education, sports, medicine, defense, communication and agriculture. With the communication revolution, we have defeated geographical distances. In agriculture, we have become self-reliant by using novel technologies like genetic engineering to get good crop production. Also in medical sciences, we are on the way to get the treatment of many epidemics and diseases like Covid-19, swine-flu, Ebola, cancer. We have also become successful in Mars Orbiter Mission (MOM). Hearing about all these good events make us feel proud and celebrate that we are in the queue of developed countries. But we can sense that mother nature is not happy as we are exploiting her. We are ruining the environment that can cost us a lot in future.

Undesirable changes like deforestation, industrial and radioactive waste in our surroundings have caused great harm to plants, animals and human beings as well. Natural greenhouse balance has been disturbed as CO2 level has crossed the 0.03% proportion in atmosphere that is the major cause of global warming. Increase in global temperature has pushed the outbreak of infectious disease like dengue and malaria.

In agriculture, excessive use of fertilizers and pesticides has caused deterioration of soil, water and air. Many micro-organisms from domestic sewage, decay of dead animals, discharge from factories, heavy metals are polluting environment. Various organic solvents like benzene, toluene (C7H8), carbontetrachloride (CCl4) are highly toxic in nature but still are in great use. Therefore, there is a dire need for remedial exercise to get balance with nature and Green Chemistry is the best way.

Meaning of Green Chemistry

Chemicals are used in every synthesis methodology whether that is for medicine, clothing, fertilizers, fuel, paper, food, printing, packaging etc.

Green Chemistry is the fastest growing arena in chemical sciences. The name "green chemistry" was given by Anastas (1991). This branch is based on twelve principles that focus on smarter synthesis of chemicals that reduces waste production. The aim of green chemistry is the design and development of chemical processes that do not pollute the environment. It is entirely different from environmental chemistry that deals with the study of polluting effects of chemicals whereas green chemistry focuses on reducing pollution at the source level.

Principles of Green Chemistry

1. Prevention of waste "Prevention is better than cure"-a proverb learnt in primary classes is the first principle of green chemistry. It is better to prevent waste than to clean it.
2. Maximum atom economy: Atom economy is mathematical measure of efficiency of a chemical reaction.
3. percentage atom economy=(no. of atom involved in reaction)/(no. of atoms in reactants)×100
4. So, number of atoms involved in reaction should be maximum to minimize the waste.
5. Less harmful chemical synthesis: new technologies should be adopted to generate safer substance.
6. Metathesis: Noble prize (2005) winners namely Chouvin, Robert and Schrock for metathesis reaction have a great contribution towards green chemistry. In this reaction, double bond between carbon atoms is broken and with the help of catalyst, place of the atom group is changed smartly that waste production is reduced.
7. Safer chemicals designing: In pharmaceuticals, great care to be taken in designing two chiral forms of molecules as one isomer may have healing effect while other may have fatal effects.
8. Safer solvents: Harmful solvents like alcohol, CCl4, CHCl3, perchloroethylene, benzene should be replaced with safer solvents like ionic liquid, deionized water, supercritical CO2 fluid. Synthesis must be carried out in aqueous medium as water is ecofriendly, nontoxic, has high specific heat and low volatility. Moreover, water is cheaper and noninflammable.
9. Renewable raw material: Chemical reactants should be renewable.
10. Use of catalyst: To enhance the rate and selectivity of a chemical reaction, biocatalyst (micro-organisms and enzymes) that are nature friendly must be used.
11. No chemical derivatives: Complex chemical derivatives should be avoided.
12. Energy efficiency: Energy need for a chemical reaction should be minimum.
13. Degradation: Chemical products should be designed such that they decompose in environment.
14. Chemical accident prevention: Chemical accidents (explosion, environmental leakage) should be minimized in a chemical procedure.

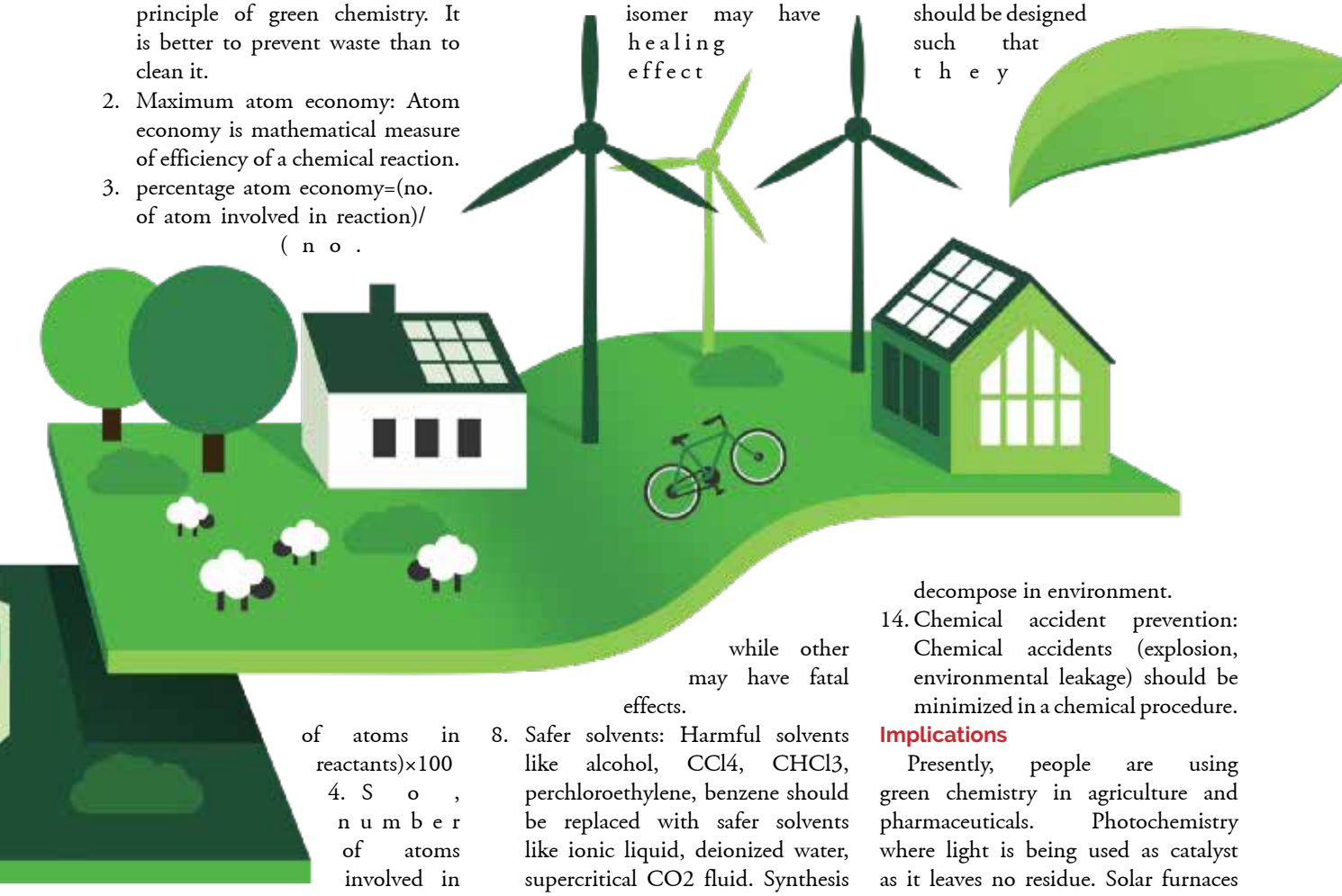

Implications

Presently, people are using green chemistry in agriculture and pharmaceuticals. Photochemistry where light is being used as catalyst as it leaves no residue. Solar furnaces

used for water purification and isomerization. Electrochemistry is also a good option for synthesis of organic compounds with reduced waste. Sonochemistry employing ultrasound (>16kHz) increase reaction rate like in esterification also being and is used in ultrasonic cleaning instead of using acetone. Microwave chemistry with heat energy giving better yield in shorter duration, accelerated reaction, minimum amount of required solvent and negligible waste production. Now a days, dry cleaning of clothes is being done with the use of liquid CO2 instead of using toxic solvent like perchloroethylene (C2Cl4). Pesticides and insecticides that get transferred to higher tropic level are now being avoided. Many farmers in Haryana have beaten the whitefly pest in hundred acres of land by using homemade clean chemical using diammoniumphosphate (DAP), urea and water instead of poisonous pesticide.

I personally believe that genetic engineering can help to reduce the use of insecticides. Bt. Cotton, Bt. Potato. crops have been engineered to produce Bt.and insecticidal proteins. DDT that is responsible for thinning of egg shells of birds has been banned. It is worth mentioning, that in gold nanoparticle formation, highly toxic and inflammable diborane has been replaced with environment friendly NaBH4. CFC (Chlorofluorocarbon) that contributes to ozone (O3) layer depletion has now been replaced with comparatively less harmful CO2. Benzene in manufacture of nylon and plasticizers has been replaced with renewable glucose.

Conclusion

As mentioned in the beginning, we cannot solve the problem by using the same kind of thinking, we used when we created them, said by Albert Einstein. We will have to shift to another framework to tackle the problem of environmental pollution. The best way to solve this problem is to switch over to green chemistry. I think, efforts should be made by our government and authorities to educate more people about green chemistry and should generate awareness among teachers, students, chemists, farmers and to all common people to adopt this approach. Only then we can reconcile economic development and environment management.

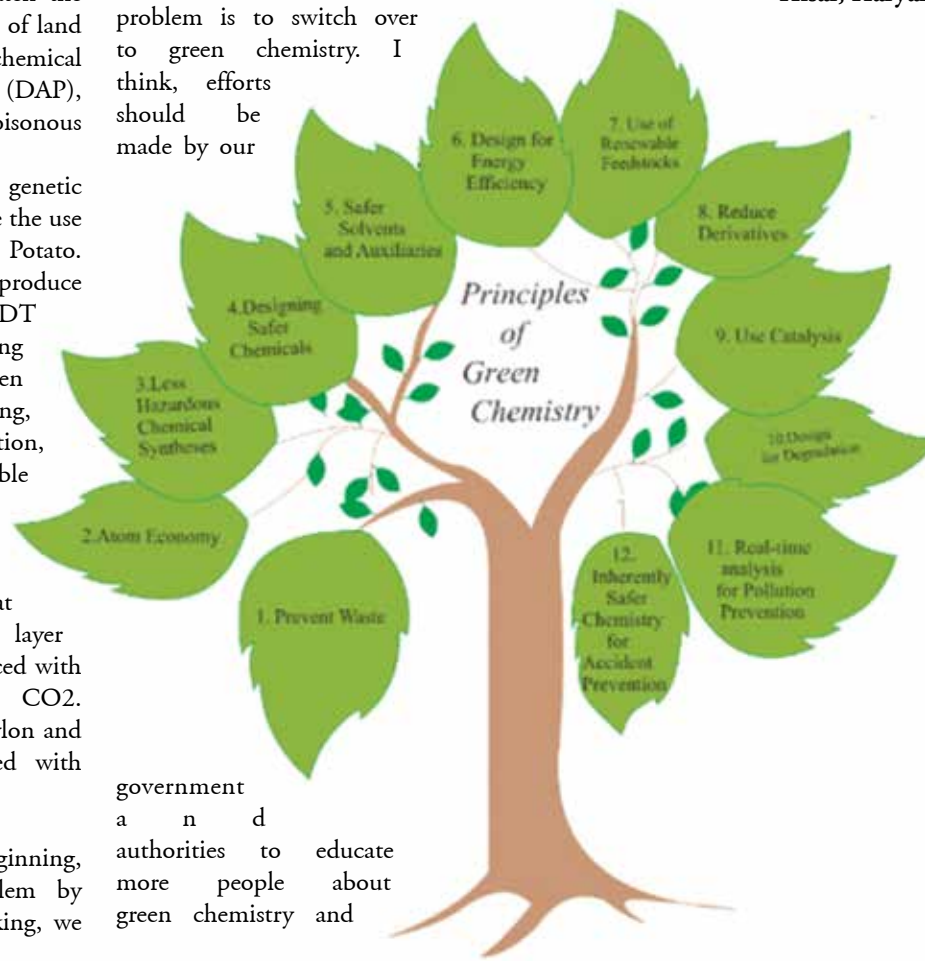

Sources:

1. Chemistry Textbook NCERT, 10+2, Part 1, Chapter 14
2. "Concept of green chemistry", B. V. Badami, Resonance, (2008) 1041,
3. S. K. Sharma, A. Choudhry and R.V. Singh, Rasayan journal of chemistry, vol 1 (2008) 68
4. www.rsc.org, green chemistry.

Purnima Arya
PGT Physics
GGSSS, Talwandi Rana
Hisar, Haryana

Popular Resources for Science Learning

The present era is era of Science and Technology. The basic understanding of science and exploration of various scientific aspects is the need of hour. When we talk about science it's not only the understanding but also the applications of the concepts followed by innovation in it, in order to meet the 21st Century skills.

If we look back about 2 to 3 decades back and talk about the study pattern and availability of resources, the situation was not that good but present-day scenario has completely changed. Now you can gather a lot of information verify the facts and may learn many new things by just a single click. There are many online resources through which we can really broaden our knowledge circle.

I have tried to provide you with a list of the most popular science websites in the world. These websites have content for a broader domain of science. These cover Physics, Chemistry, Life Sciences, Electronics, Psychology, Health & Medicine,Space, History, Clinical Practice, Astronomy, Health, Space, Brain and Behaviour and Technology. The list of such popular websites is given below -

1. www.howstuffworks.com
2. www.nasa.gov
3. www.discovery.com
4. www.sciencedaily.com
5. www.livescience.com
6. www.nature.com
7. www.scientificamerican.com
8. www.space.com
9. www.popsci.com
10. www.sciencedirect.com
11. www.treehugger.com
12. www.newscientist.com
13. www.sciencemag.org
14. www.redorbit.com
15. www.scienceblogs.com

These are suggestive references and the viewer is advised to act as per the call of hour. Let's explore the world of science and use these to be a scientifically aware person. Wish you all a great journey of knowledge.

Dr Sanjay Prakash Kaushik
Subject Specialist Physics
SCERT Gurugram – Haryana

Continuous Professional Development in Mathematics For BRPs And ABRCs

NEP, 2020 has envisioned connecting Mathematics with the upcoming fields that are important to work in future professions, and the National position paper of Mathematics, 2006 has highlighted the importance of mathematical processes such as Pattern seeking, Problem-solving, problem posing, Visualization, Representations, Mathematical Communication, Mathematical Creativity, making connections, Use of Heuristics, Estimation and Approximation, Optimization, Reasoning, and Convincing, Proof and Proving, that needs to be developed among children for doing Mathematics. Further, we know from Mathematics Education research how to make the teaching and learning process of mathematics engaging and productive. Despite such recommendations and available research, teachers are used to the 3x approach, i.e., explain first, then give an example followed by doing similar exercises.

This approach might be followed because of the teachers' conceptions of the nature and goals of mathematics and the way they were taught mathematics in their schooling. The image of mathematics prevailing in society is its unidimensional character, with a set of procedures and facts and having one right way with one correct answer. The way mathematicians see Math is connected where exploring patterns, making conjectures, and making mistakes are essential parts of doing mathematics. Hence, there is a need to make new research and evidence-based teaching and learning accessible to the teachers as well as on-field support to implement innovative and new practices.

To inspire, educate and empower teachers of mathematics, transforming the latest research on math learning into accessible and practical forms and implementing the recommendations given by NCF, 2005 and NEP 2020, the Mathematics Education Department, SCERT, Haryana has begun with a project on Continuous Professional Development of BRP and ABRCs as they are involved in the mentoring and supporting teachers in the field. In the first phase, a group of around 40 officials have been selected for this Program,the department identified 235 BRP and ABRCs, having the highest qualification in Mathematics/Education/Psychology program where the officials get connected with the SCERT through

Weekly Online Interactions. Online weekly Sessions provide the platform to flow and exchange ideas and each other's belief systems that help in thinking critically and deeply about the existing classroom practices, approaches followed in Primary Math textbooks and the latest developments in the field of Mathematics Education. Participants feel free to discuss the classroom-related challenges and their plausible solutions.

As already discussed, one of the major challenges in the field is to move from 3x approach to a Constructivist approach-based pedagogy where learners are provided with interesting and exploratory challenges. To develop such understanding among the BRPs & ABRCs and further, convince teachers for the same, they were involved in working on such tasks in groups (In breakout rooms), doing field trials of the challenging tasks, and writing reflections while working on these tasks.

In the online interactions, they are also provided with the opportunities to deeply analyze the tasks and activities given in the Primary Mathematics textbooks from the lens of Constructivist pedagogy, the nature of Mathematics and the Psychology of a Child. The participants work in smaller groups (in the breakout rooms) on the tasks given in the textbook,share and discuss their solutions, strategies and reflections with the whole group. They are also provided with readings and Videos on the learning process, Nature of Mathematics and were asked to compare the tasks with the aspects of the learning process. Such opportunities helped in deepening their understanding of Primary mathematics textbooks which would further add to building their confidence in convincing teachers to use Math textbooks sensibly.

Further, to Monitor and record their progress, the Google classroom Management system is utilized. All the session recordings, important links, readings, Session notes, assignments, reflection tasks, quizzes etc. are uploaded on Google Classroom which can be accessed anytime as per the convenience of the participants. It has been almost three months, since these sessions are being conducted, and there has been certainly a positive response from the participants. We hope that these sessions would bring significant change in the thinking of BRPs and ABRCs that would certainly add to their professional development and bring a positive change in teachers' Pedagogy.

Dr. Jasneet Kaur
Lecturer Mathematics,
SCERT, Haryana, Gurugram

Questions serve an important purpose

"I cannot teach anybody anything. I can only make them think" -Socrates

A teacher should be a friend, philosopher, and counsellor. Her intellectual egotism prevents her from outright rejecting or discouraging the inquisitive perspectives of her students. Instead, she is inspired to engage the students in class by her responding attitude toward them. She engages in constructive debate with her students by asking probing questions. There is an inevitable importance of questioning in the process of teaching and learning. The appropriate style of questioning inculcates the critical thinking in the students by effectively stimulating their minds. The perspectives of the students might, in turn, prompt the teacher to think along additional dimensions and provide her with fresh perspectives on a particular topic. It is very profoundly said that to teach is to learn. That is why the teacher needs to be very creative and learning oriented in terms of questioning also.

Importance of Questioning:

Paul and Elder, the prominent psychologists have rightly supported the orientation in this way: 'Thinking is not driven by answers but by questions. Had no questions been asked by those who laid the foundation for a field… the field would never have developed in the first place'.

Teachers must constantly ask questions in order to keep a field of thought or a concept or topic alive, rather than simply allowing that field to close down. Teachers can then use questioning to challenge students' thinking by motivating new or defined answers.Many studies have found that young children have a higher IQ at a younger age if their parents speak to and question them on a regular basis, as opposed to those whose parents do not engage them in questioning-based conversation. The questioning in the classrooms fosters the ability of the learner to express their views and thoughts in more creative and constructive manner.

Teachers can use the question-and-answer session to practice a variety of questioning techniques and reinforce them in order to motivate students and encourage their thinking in the desired direction. One of the most effective ways to engage students in the delivery of the lesson is through questioning. Teachers can engage students in thinking about the content of a lesson while also receiving feedback from students to demonstrate the impact of teaching by asking questions. A teacher's questioning abilities are critical, and they are complex. If these abilities are used effectively, students' performance will improve, and the teaching and learning environment will become more active and encouraging.

Distribution of the Questions:

All the students should be asked questions in order to encourage them to participate in the teaching and learning process. Teachers should also avoid asking questions based on seating position of the students in the classroom. As a result, all students would concentrate on the concept and participate actively in the process of teaching and learning.

Questioning Levels:

The levels of questioning should be varied in the form of questions posed during the teaching and learning activity. In his book Taxonomy of Educational Objectives, Benjamin S. Bloom divides the six levels of questions into the cognitive domain. It begins with questions about recalling

facts, which are the lowest levels, and progresses to the most complex and abstract levels, which are classified as evaluation. The following are the six levels of questions based on the revised Bloom's Taxonomy:

i. **Remember:** These are knowledge-based questions that can be easily digested by the student's memory. Questions of this kind should be chosen by the teacher, especially when presenting new topics and ideas to the students.

ii. **Understanding:** After working with concepts and knowledge, teachers should ask comprehension questions. This means that teaching and learning activities take place in the dimension of comprehension or comprehension activities.

iii. **Application:** Application questions are designed to help students apply their knowledge through the information provided during teaching and learning activities.

iv. **Analysis:** The feature of an analytical question is that this type of question has the effect of separating ideas. At higher levels, students will be faced with analytical questions, and teachers must be careful that students can stick to the content of the subject and apply all the skills to it.

v. **Evaluation:** At the highest level, assessment questions are given to students. Here evaluation means that students must be able to make and maintain their arguments.

vi. **Creativity:** Questions that can help students come up with a new idea based on the initial information and their understanding they are exposed to.

Conclusion:

Asking questions during the teaching and learning process is one of the most important aspects of acquiring knowledge. Teachers should focus on questioning techniques during the teaching and learning process to foster student interest in learning. Questioning techniques motivate students and increase their ability to think critically and creatively. Additionally, these techniques engage students actively in the teaching and learning process and stimulate the acquisition of Higher Order Thinking Skills (HOTS). Through the technique of questioning, teachers can explain important content so that students can understand and develop their thinking to a higher level. Therefore, the teachers of all domains should give utmost importance to questioning techniques to produce globally competitive students.

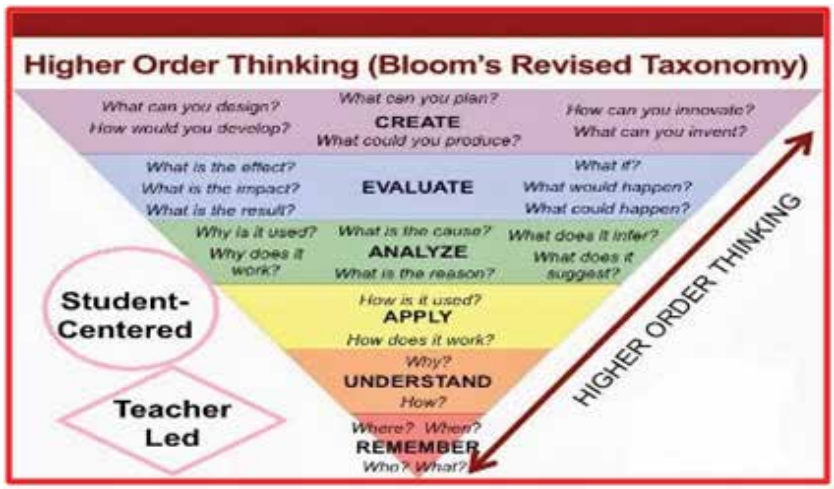

Dr. Dinesh Phogat
Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

Courses After +2

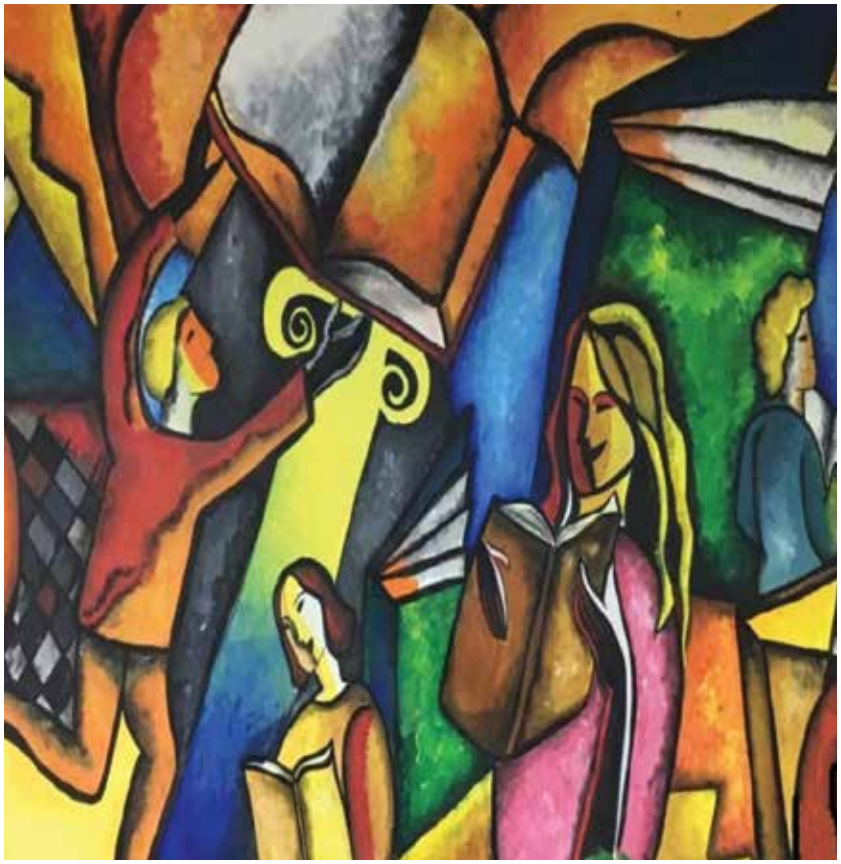

4.) Management Stream:

One of the best courses after 12th is Management and it is one of the highest job oriented career fields. It is one of the most popular fields among the students. Management involves regulation and maintenance of overall functioning and administration of a organization. This field is the preferable area among the students who do courses in 12th Commerce. Management is highly job oriented course also having high pay for other employment and courses. Management field provides a responsible, challenging and respectful position to an aspirant who wants to work in the corporate environment. It has various disciplines & specializations and has the opportunity for global employment.

4.1.) BBA – Bachelor of Business Adminisration:

BBA is a business-oriented course after 12th which helps the students in understanding the basics of business and overall management process. The students can choose this course after 12th if they want to make their career in the management field. The students can work in management firms, business organizations, and IT companies.

4.2.) MBA – Master of Business Administration:

A master of business administration (MBA) is a graduate degree achieved at a university or college that provides theoretical and practical training to help graduates gain a better understanding of general business management functions.

4.3.) Marketing Management:

Marketing management is the organizational discipline which focuses on the practical application of marketing orientation, techniques, and methods inside enterprises and organizations and on the management of a firm's marketing resources and

activities.

4.4.) Finance Management:

Financial management refers to to the efficient and effective management of money (funds) in such a manner as to accomplish the objectives of the organization. It is the specialized function directly associated with top management.

4.5.) Human Resource Management:

Human resource management the best courses after 12th is an essential function of both private and public sector organizations. In this lesson, you'll learn what human resource management is as well as its objectives and responsibilities in a organization.

4.6.) International Business Management:

Today the business scenario is not limited up to national boundaries. Business is now conducted globally across the national boundaries. Due to the rapid rise in the global business, the demand of the professionals is increased in various MNCs and reputed organizations who are looking to conduct their business globally. International Business management is becoming a popular specialization among the students day-to-day.

4.7.) Operation Management:

Operations management refers to to the administration of business practices to create the highest level of efficiency possible within a organization. It is concerned with converting materials and labor into goods and services as efficiently as possible to maximize the profit of a organization.

4.8.) Event Management:

Event management is the application of project management to the creation and development of large-scale events such as festivals, conferences, ceremonies, formal parties, concerts or conventions.

4.9.) Retail Management:

At present retail industries is growing worldwide. There are many plazas, malls, shopping world, multiplexes and shopping centers around us. It is becoming a different world of our needs. Retail management deals with the management, storing, logistics and customer satisfaction. This field is a vastly growing field and having huge employment opportunities. Various international retail industries are demanding qualified graduates in the same field.

5.) Medical Science Stream:

Career options or courses after 12th in the medical field are one of the most asked queries among the students.

The medical field is one of the respectable, challenging, responsible, top paid and highly job-oriented fields are not only in India but also all over the world. The competition in this area

cannot be taken lightly. It is a highly competitive career. Often, the primary motive of most of the students behind choosing Biology after 10th standard is to become a well-qualified Doctor; but this field offers a vast number of career opportunities other than MBBS Doctor.

In medicine, the term course takes one of two meanings, both reflecting the sense of "path that something or someone moves along. Processor sequence or steps". A course of medication is a period of continued treatment with drugs, sometimes with variable dosage and in particular combinations.

5.1.) MBBS:

Bachelor of Medicine and Bachelor of Surgery, or in Latin: Medicinae Baccalaureus, Baccalaureus Chirurgiae (abbreviated in many ways e.g. MBBS, MBChB, MBBCh, MB BChir (Cantab), BM BCh (Oxon) (BMBS)) are the two first professional degrees in medicine and surgery awarded upon graduation from medical school by universities.

5.2.) BDS:

BDS (Bachelor of Dental Surgery) is the only educational and professional programme for dental surgery. The BDS degree is equivalent to an MBBS degree but works in a different domain. In the medical educational field, this is the second choice of the students after the MBBS course. In this course, the students are taught about the denture dental problems and dental surgery.

5.3.) Nursing:

The main motive of this educational programme is to produce qualified and expert nursing professionals. Nurses are the members of the healthcare team. In this programme, the students are taught about the nursing and cure methods and techniques. After the completion of this course, the candidate is free to work with hospital and healthcare organizations.

5.4.) Physiotherapy:

Physical therapy or physiotherapy is a branch of rehabilitative medicine aimed at helping patients maintain recover or improve their physical abilities. Physical therapy also means the treatment of any pain, disease or injury by physical means.

5.5.) Medical Lab Technician:

In every science and medical field, there exists a lab.

The career options or courses after 12th in medical lab technology are huge and provides ample job opportunities to the candidates having appropriate diploma/degree course in this field.

In this course, the students are taught about the analysis of medical test, microbiology, instrumentation and many other areas related to medical field.

5.6.) Pharmacy:

It is the science and technique of of preparing and dispensing drugs. [citation needed] It is a health profession that links health sciences with chemical sciences and aims to ensure the safe and effective use of of pharmaceutical drugs.

6.) Science Stream:

Those students that have science in their 12th standard have multiple choices. Courses after 12th for science students are an lot. The best point for theses students are they can choose any course from any stream like arts, commerce or any other courses. The most popular career fields for the science students have already been mentioned above, but here we are also listing some other popular fields for science students.

6.1.) B.Sc:

A Bachelor of Science receives the designation BSc or BS for a major/pass degree and BSc (Hons) or BS (Hons) for an honours degree. In England Wales, India and Northern Ireland an honours degree is typically completed over a three-year period, though there are a few intensified two-year courses (with less vacation time).

6.2.) Biotechnology:

Biotechnology is the use of of living systems and organisms to develop or make products or any technological application that uses biological systems. Probably living organisms or derivatives are make or modify products or processes for a specific use.

6.3.) BCA:

Bachelor of Computer Applications is a 3 years undergraduate degree course after 12th in the field of Computer Applications. Some students use online or distance education programs to earn this degree. BCA distance education course has marvelous career options for the students after they complete their course.

6.4.) BSC.IT:

A Bachelor of Science in Information Technology (abbreviated BSIT or B.Sc IT) is a Bachelor's degree awarded for an undergraduate course or program in the Information technology field. The degree is normally required in order to work in the Information technology industry.

Conclusion:

Today in these decades, education for a student is very much essential in shaping their future. This article was specially written for those who are keenly searching for career options and the courses after 12th standard. There are many other courses apart from the list mentioned above. The main courses after 12th are listed here. Each course duration will be around 3-5 years. It is up to the students own interest and knowledge in the field they are choosing. Choose your career based on your interest, not anyone's suggestion. This will give you confidence in your future and you will shine in your area.

Before making your decision think about what you want to become in future? An employee working for a company or an entrepreneur. This will make you come up with the right decision for your future.

https://www.careerspark.org/post/top-50-courses-after-12th-career-salary-and-job-opportunities

Amazing Facts

1. All babies are colour blind when they are born.
2. Rocky Mountain spotted fever is a disease caused by ticks.
3. There are approximately 9,000 taste buds on the tongue.
4. A fetus starts to develop fingerprints at the age of eight weeks.
5. The reason why your nose gets runny when you are crying is because the tears from the eyes drain into the nose.
6. Gorillas can catch human colds and other illnesses.
7. On October 15, 1794, the first silver dollar coins were released to be circulated to the public.
8. In one day, the Tootsie Roll Industry makes over 16 million lollipops.
9. In many of the milk ads that are shown, a mix of thinner and white paint is used instead of milk.
10. Baskin Robbins once made ketchup ice cream. This was the only vegetable flavoured ice cream produced. However, they discontinued it since they thought it would not sell well.
11. In a year, an average person makes 1,140 phone calls.
12. The music group Simply Red got its name from band member Mick Hucknall, who has red hair.
13. The lifespan of a rhinoceros is generally 50 years.
14. The largest ice cream sundae was made with 4,667 gallons of ice cream, was 12 feet high and had 7000 pounds of toppings on it. This was made in Anaheim, California in 1985.
15. The name of the award given to honor the best sites on the Internet is called "The Webby Award."
16. The United States Mint once considered producing donut-shaped coins.
17. A Hungarian named Ladislo Biro invented the first ballpoint pen in 1938.
18. Adolf Hitler loved chocolate cake.
19. Many years ago, a fish was caught that was 33 inches long and seemed to be heavier than it should. When they cut the fish, fishermen found a full of bottle of ale inside it.
20. George Washington grew hemp in his garden.
21. In New York City, approximately 1,600 people are bitten by other humans annually.
22. In 1980, Saddam Hussein received a key to the city of Detroit.
23. The song "Strawberry Fields Forever" sung by the Beatles refers to an orphanage located in Liverpool.
24. The DNA of humans is closer to a rat than a cat.
25. Peladophobia refers to the fear of bald people.
26. One Neptune year lasts 165 Earth years.
27. In the U.S., 75% of the pencils sold are painted yellow.
28. A person that is struck by lightning has a greater chance of developing motor neurone disease.
29. In Canada, the $1 and $2 come in the form of coins. The $1 is nicknamed a "loonie" because it contains a loon on it and the $2 is nicknamed the "twonie" because it is the equivalent of two "loonies."
30. Singer Michael Jackson owned the rights to the South Carolina State anthem.

https://greatfacts.com

1. What term for behaving in a subservient (overly agreeable and unquestioningly obedient) manner, especially to a boss, derives from an ancient Chinese bowing gesture? **Kowtow**
2. A colony of Britain until 1956, with the capital city of Khartoum, the south of what African country became an independent state in July 2011? **Sudan**
3. What famous palm-top computer brand suffered major stock-market confidence problems following large-scale product faults in 2011? **Psion**
4. Ursa Major and Ursa Minor are constellations known respectively more commonly as Great and Little what? **Bear**
5. What common name is given to medial tibial stress syndrome (MTSS)? **Shin Splints**
6. What ancient name applies to the 'days' of hot summer, derived from belief that the star Sirius caused them? **Dog Days**
7. Of these sedimentary rocks, which one is not organic, being instead 'clastic': Peat; Jet; Coal, Lignite; or Shale? **Shale**
8. On the Beaufort Scale of wind force what wind name is given to number 8, which "...Breaks twigs off trees and impedes progress..."? **Gale**
9. What Japanese Emperor ruled from 1926-89? **Hirohito**
10. What two spices, a large seed and its outer covering, come from the plant Myristica fragrans? **Nutmeg and Mace**
11. What notable leader was born in Ranshofen, near Braunau, Austria, in 1889? **Adolf Hitler**
12. Dendrites, nucleus, axon, and myelin sheath are cellular components of what sort in the human body: Blood; Nerve; Digestive; or Hair? **Nerve**
13. Somalia is in the region known as the what of Africa: Basin; Sound; Horn; or Hook? **Horn**
14. A piece of what monument forms part of Ronald Reagan's statue in London's Grosvenor Square: Great Wall of China; Berlin Wall; Hadrian's Wall; or the Wailing Wall? **Berlin Wall**
15. Derived from French pantomime, what is a clown with a white face, white garments, and pointed hat? **Pierrot**
16. What international contest awards the famous Claret Jug trophy? **British Open Golf Championship**
17. Name the Qatar capital and significant host city for WTO (World Trade Organization) talks in the early 2000s? **Doha**
18. What in 2010 became the much-derided all-encompassing new brand name representing the combined businesses of Orange and T-Mobile? **Everything Everywhere**
19. Teams competing in what famous annual July event include THC, Movistar, Leopard, BMC and Quick-Step? **Tour de France**
20. Name the two 2011 UK police operations respectively investigating the interception of voicemail messages, and the payment of police officers for information, by the News of the World newspaper? **Weeting and Elveden**
21. The Picts were an ancient tribe of people occupying what country in Roman times? **Scotland**
22. Seismic refers to what natural effect: Earthquake; Wind; Thunder; Lightning? **Earthquake**
23. Considered the largest food company globally (at 2011), Nestlé was founded and is headquartered in what country? **Switzerland**
24. What is the organic compound acid, chemical formula CH3COOH, and main component of vinegar? **Acetic acid**
25. What ground-covering plant (potentially a lawn or tea flavour/flavor) is named from the Greek meaning 'on the ground apple'? **Chamomile**
26. Used with oxygen to weld and cut metal due to its high flame temperature what is the compound C2H2 commonly called? **Acetylene**
27. A biennial plant: Lives for two years; Flowers twice a year; Flowers alternate years; or Flowers every twenty years? **Lives for two years**
28. What color/colour is a polar bear's skin: Pink; White; Black; or Green? **Black**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-404-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' पत्रिका का पिछले माह का अंक पढ़ने का अवसर मिला। 'विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षक' पर केंद्रित यह अंक वास्तव में बहुत सी जानकारियों से भरपूर था। यह भी पता चला कि प्रदेश में युवाओं के कौशल विकास के लिए विभाग की ओर से किस प्रकार पूरी प्रतिबद्धता से प्रयत्न किए जा रहे हैं। एनएसक्यूएफ कार्यक्रम विद्यार्थियों के जीवन को बदल रहा है। जो विद्यार्थी किसी कारणवश आगे पढ़ाई जारी नहीं रखना चाहते, यह कार्यक्रम उनके लिए तो वरदान है ही, साथ ही उन विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी है जो किसी खास व्यावसायिक क्षेत्र में दक्षता हासिल करना चाहते हैं। हरियाणा के विद्यार्थियों को टूल किट देना, इस बात का द्योतक है कि सरकार इस दिशा में काफी गंभीरता से कार्य कर रही है। विभिन्न रोज़गारों के बारे में भी काफी रोचक जानकारी प्राप्त हुई। इतने बढ़िया अंक के लिए 'शिक्षा सारथी' की पूरी टीम तथा विद्यालय शिक्षा विभाग को बहुत-बहुत बधाई।

सुरेश राणा
हिंदी प्राध्यापक
रावमा विद्यालय कमालपुर
जिला-कैथल, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' पत्रिका का रूप तो दिनोंदिन निखरता जा रहा है। इसका तो हर अंक संग्रह करने लायक है। मेरे पास भी इस पत्रिका के पचास से अधिक अंक हैं। अध्यापक ही नहीं, बच्चे भी इस पत्रिका को काफी चाव से पढ़ते हैं। स्थायी स्तंभ 'बाल-सारथी' तो बच्चों को विशेष रूप से प्रिय है। हर अंक में दर्शन बवेजा 'खेल-खेल में विज्ञान' के रोचक खेल सिखाते हैं। यदि सभी विज्ञान अध्यापक इस ढंग से शिक्षण कराएँ तो निश्चित रूप से विज्ञान में बच्चों की रुचि बढ़ेगी। सितंबर-अंक से जानकारी मिली कि किस प्रकार प्रदेश में विद्यार्थी सामान्य पढ़ाई के साथ-साथ विभिन्न कौशलों में भी पारंगत हो रहे हैं। डॉ. विनय स्वरूप मेहरोत्रा का लेख बहुत रोचक था तथा अनेक प्रकार की जानकरियों से भरपूर था। 'तिरंगे का सफर' पढ़कर हमारे ध्वज के बारे में काफी नई जानकारी मिली।

सुभाष शर्मा
अंग्रेजी प्राध्यापक
रावमा विद्यालय टिक्कर हिल्स
जिला-पंचकूला, हरियाणा

गणितीय ज्ञान

एक वर्ष में बारह महीने,
महीने में सप्ताह हैं चार।
सप्ताह में दिन होते सात,
जिनको हम कहते हैं वार।

एक वार (दिन) में चौबीस घंटे,
हर घंटे में साठ मिनट,
एक मिनट में सेकंड साठ,
आओ याद करें झटपट ।

जो दो से पूर्ण होती भाग,
कहलाती है संख्या सम,
जो दो से पूर्ण न हो भाग,
वो कहलाए संख्या विषम।

पहले छोटा, बड़ा बाद में,
होता ये आरोही क्रम।
पहले बड़ा, बाद में छोटा,
बन जाता अवरोही क्रम।

छोटी, बड़ी संख्या की हमको,
तीर पहचान कराए ।
नोंक तीर की जिधर भी हो,
वह छोटी संख्या कहलाए ।

पूर्ववर्ती है पिछली संख्या,
एक घटा करने पर आए।

अनुवर्ती है अगली संख्या,
एक जोड़ने पर हम पाएँ।

चार भुजाएँ सम अगर,
बनती बंद आकृति ।
चारों कोण समकोण हों,
वो वर्ग सदा कहलाती।

आमने-सामने की भुजा सम हो,
कोण सभी समकोण हों ।
ऐसी बंद आकृति की,
आयत ही पहचान हो।

एक बिन्दु को केन्द्र मान,
यदि गोला हम बनाएँ ।
ऐसी बनी हुई आकृति,
सदा वृत्त कहलाए ।

तीन भुजाओं से घिरी आकृति,
त्रिभुज ही सब कहते ।
सम, विषम व समद्विबाहु
भिन्न -भिन्न रूप हैं होते ।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय- सराय
अलावर्दी गुरुग्राम, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

नई ज्योति के धर नए पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण द्वार जगमग,
उषा जा न पाए, निशा आ न पाए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में,
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी,
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी,
चलेगा सदा नाश का खेल यूँ ही,
भले ही दिवाली यहाँ रोज आए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

मगर दीप की दीप्ति से सिर्फ जग में,
नहीं मिट सका है धरा का अँधेरा,
उतर क्यों न आयें नखत सब नयन के,
नहीं कर सकेंगे हृदय में उजेरा,
कटेंगे तभी यह अँधरे घिरे अब,
स्वयं धर मनुज दीप का रूप आए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

- गोपालदास 'नीरज'

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114